जनपदीय भाषा-साहित्य (छत्तीसगढ़ी)

छत्तीसगढ़ प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में लागू
बी.ए. भाग-तीन, हिन्दी साहित्य
(प्रथम प्रश्नपत्र)
के एकीकृत पाठ्यक्रमानुसार

प्रधान सम्पादक

डॉ. सत्यभामा आड़िल
आचार्य एवं अध्यक्ष - हिन्दी विभाग
शा. दू.ब. स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय (स्वशासी)
रायपुर (छ.ग.)

सम्पादक

डॉ. तेजराम दिल्लीवार
अध्यक्ष - हिन्दी विभाग
बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धमतरी

डॉ. सविता मिश्र
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी विभाग
शा. दू.ब. स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय (स्वशासी)
रायपुर (छ.ग.)

विकल्प प्रकाशन, रायपुर

प्रथम आवृति - 2004

मूल्य - Rs. 35.00

• प्रकाशक :

मनहर आड़िल

विकल्प प्रकाशन

एम.आई.जी.5, सेक्टर-I, रायपुर (छ.ग.)

फोन-2428099, 3091396

वितरक :

अग्रवाल ट्रेडर्स, सत्तीबाजार, रायपुर (छ.ग.)

अनुक्रम

छत्तीसगढ़ी भाषा-साहित्य

(प्रथम प्रश्न पत्र)

इकाई-विभाजन

इकाई एक	-	व्याख्या
इकाई दो	-	प्राचीन एवं अर्वाचीन रच (संत धर्मदास, लखनला गुप्त, सत्यभाम विनय पाठक, मुकुन्द कौल)
इकाई तीन	-	(अ) - छत्तीसगढ़ी भा (ब) - छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास
इकाई चार	-	द्रुतपाठ के तीन रचनाकार (लघूत्तरीय) (1) सुंदरलाल शर्मा (कवि) (2) रामचन्द्र देशमुख (रंगकर्मी) (3) कपिलनाथ कश्यप (कवि एवं गद्यका
इकाई पाँच	-	वस्तुनिष्ठ एवं अतिलघूत्तरीय प्रश्न (सम्पूर्ण क्रम

अंक विभाजन

3 व्याख्याएँ	-	21 अंक
2 आलोचनात्मक प्रश्न	-	24 अंक
5 लघुत्तरीय प्रश्न	-	15 अंक
15 वस्तुनिष्ठ/अति लघुत्तरीय प्रश्न	-	15 अंक
कुल	-	75 अंक

संपादकीय

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित नए पाठ्यक्रमानुसार, जनपदीय भाषा के साहित्य का अध्ययन आवश्यक माना गया है, क्योंकि हिन्दी केवल खड़ी बोली नहीं है, बल्कि एक बहुत बड़ा भाषिक समूह है। हिन्दी जगत् में अनेक विभाषाएँ, बोलियाँ और उपबोलियाँ विद्यमान है, जिनमें पुष्कल साहित्य सम्पदा है। इनके सम्यक् अध्ययन और अन्वेषण की आवश्यकता है।

"जनपदीय भाषा छत्तीसगढ़ी निरंतर विकास की ओर अग्रसर हो रही है, अस्तु इस भाषा का और इसमें रचित साहित्य का इतिहास, विकास स्पष्ट करते हुए, इनसे संबंधित प्रमुख रचनाकारों का आलोचनात्मक अनुशीलन करना हिन्दी के वृहत्तर हित में होगा।"

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की उपयुक्त धारणा के अनुसार बी.ए. अंतिम के लिए निर्धारित प्रश्नपत्र ''जनपदीय भाषा-साहित्य'' का पाठ्यक्रंम तैयार किया गया। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पाठ्यविषय का मूल भावार्थ दिया गया है। इस संकलन को तैयार करने में, डॉ. तेजराम दिल्लीवार एवं डॉ. सविता मिश्र का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। वे दोनों मननशील सुधी, धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है यह संकलन विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों के लिए अध्ययन-अध्यापन का पाथेय बनेगा।

डॉ. सत्यभामा आड़िल

उन्हीं में से कुछ यहाँ भी बस गये। अपनी काव्य सृजन की दक्षता का लोहा मनवा चुके कवि अवधी एवं ब्रज में ही यहाँ रहकर पारंपरिक छन्दों का सृजन करते रहे। लेकिन छत्तीसगढ़ में रच बस जाने के बाद इन्हीं कवि व्यक्तित्वों की नई पीढ़ी ने छत्तीसगढ़ी को काव्य साधना का माध्यम बनाया। इसी तरह धर्मदास के वंशज भी बांधवगढ़ से छत्तीसगढ़ में आये। धर्मदास के पद जन-जन में प्रचारित होने लगे।

धर्मप्राण छत्तीसगढ़ी मानस ने इन रचनाओं के आलोक में अपना जीवन आदर्श चुना।

छत्तीसगढ़ में भिन्न-भिन्न काल में मुसलमानों, मराठों और अंग्रेजों का शासन रहा। हर शासक के अपने आग्रह भी रहे। छत्तीसगढ़ी में उर्दू, मराठी और अंग्रेजी के शब्द भी इसीलिए घुले मिले। भाषा समृद्ध हुई। लेकिन छत्तीसगढ़ में शौर्य की गाथायें कम हैं। छत्तीसगढ़ी लड़ना नहीं जानता। शायद इसीलिए शौर्य से जुड़ी गाथायें कम लोकप्रिय हुई। श्रृंगार और भक्ति के रंग में डूबी गाथाओं ने जन मन में स्थान बनाया।

लोरिक चंदा, ढोला मारू, आल्हा उदल की गाथा और भरथरी की कथा छत्तीसगढ़ में आज भी प्रचलित हैं। पूरे प्रभाव के साथ ये कथायें आज मंच पर रूप ग्रहण करती हैं। लगभग पाँच सौ वर्षों की यात्रा कर ये कथायें पर विराजित हुई हैं।

''हरबोलवा'' कवियों को हम आशु कविता के लिए याद कर सकते हैं। रात्रि के अंतिम प्रहर में गाँव के पेड़ पर चढ़कर गाँव से जुड़े इतिहास का बखान करने वाले ''हरबोलवा'' आज नगण्य से रह गये हैं। लेकिन छत्तीसगढ़ में इनका अपना महत्व रहा है। खासकर तुरंत गाँव की कहानी को तुक के साथ पूरे प्रभाव में गाने का उनका अंदाज भुलाये नहीं भूलता। गाँव के समृद्ध व्यक्तियों की प्रशंसा में भी ये ''हरबोलवा'' कवि रचनाएँ रचते और गाते थे। धार्मिक आख्यानों की समृद्ध परंपरा से कविता के विकास में भरपूर सहयोग छत्तीसगढ़ी को मिला।

छत्तीसगढ़ के ग्राम्य जीवन में रामलीलाओं की परंपरा रही है। रामलीला के मंच पर भी छत्तीसगढ़ी ने स्वाभाविक रूप से प्रवेश किया। पारसियन थियेटर का प्रभाव छत्तीसगढ़ी लोक मंच पर भी पड़ा। हरिश्चंद्र, ध्रुव, प्रहलाद, मोरध्वज आदि नाटक यद्यपि लिखे तो गये लोकभाषा के स्पर्श से एक नए रूप में ढली हिन्दी में, किन्तु यहाँ भी छत्तीसगढ़ी ने प्रवेश प्राप्त कर लिया।

कबीर की परंपरा छत्तीसगढ़ी नाचा में हमें देखने को मिलती है। कबीर की साखियों का प्रयोग खड़े साज में बहुतायत से हुआ, लेकिन धीरे-धीरे इन साखियों ने ही छत्तीसगढ़ी वसन धारण कर लिया। आज मंच पर छत्तीसगढ़ी में साखियाँ और छत्तीसगढ़ी में पद प्रस्तुत होते हैं।

गुरू घासीदास छत्तीसगढ़ के प्रथम संत हैं जिनकी मातृ-भाषा छत्तीसगढ़ी थी। उनके सिद्धातों को छत्तीसगढ़ की ग्राम्य भाषा में लोगों ने सुना-समझा। पंथी गीतों के रूप में ढलकर यही सिद्धांत दिगन्तव्यापी हो गये। छत्तीसगढ़ी भाषा के विकास एवं उसकी व्याप्ति के वृहत्तर संदर्भों में गुरु घासीदास के अनुयायियों के योगदान का विशेष महत्व है।

संत धर्मदास के बाद गुरु घासीदास ने छत्तीसगढ़ी में काव्यसृजन की ललक को अभिवृद्ध किया। इनके प्रभाव से सृजित कविता में जीवन के मानक सिद्धांत तथा मनुष्य की वैचारिक यात्रा के प्रमुख पड़ावों को हम समझ पाते हैं। बलि प्रथा, मूर्तिपूजा तथा मांस-मदिरा के खिलाफ छत्तीसगढ़ी जन में जागृति के लिए प्रभावी पदावलियाँ रची गई। इन पदों और गीतों को सिद्ध मंत्रों की तरह छत्तीसगढ़ी जन ने स्वीकार किया -

''मंदिरवा म का करे जइबो, अपन घर ही के देव ल मनइबो''

गुरु घासीदास का यह कथन धड़कते हुए जीवन को सम्मानित करने के लिए प्रेरित करता है। आडंबर और जड़ता के खिलाफ उठ खड़े होने का आह्वान ऐसे गीतों के माध्यम से किया गया।

छत्तीसगढ़ी का आधुनेक युग भी धार्मिक कथा की प्रभावपूर्ण प्रस्तुति से समृद्धि की शुरुवात करता है। पंडित सुन्दरलाल शर्मा लिखित ''दान लीला'' महाकाव्य आज भी आधुनिक छत्तीसगढ़ी कवियों के लिए मानक ग्रंथ कहलाता है। महात्मा गाँधी के सिद्धातों को छत्तीसगढ़ में जमीनी आधार देकर अग्रदूत के रुप में पंडित सुन्दरलाल शर्मा समाहृत हुए। समाज सेवा के लिए, सामाजिक परिवर्तन को सकारात्मक मोड़ दने के लिए पंडित सुंदरलाल शर्मा ने भिन्न भिन्न माध्यमों का प्रभावी उपयोग किया। कविता को भी उन्होंने एक माध्यम माना। वे छत्तीसगढ़ी के प्रथम ऐसे आधुनिक कवि हैं जिन्होंने विपुल लेखन किया। उनके बाद पचास वर्षों का ऐसा सूना अंतराल आता है जिसमें उन जैसे कृति व्यक्तित्व का उद्‌भव नहीं दिखता।

जगन्नाथ प्रसाद भानु, कपिलनाथ मिश्र, शुंकलाल पाण्डे ने सृजन की बंदनीय परंपरा को समृद्ध किया। लेकिन पंडित सुन्दरलाल ने पहली बार छत्तीसगढ़ी कविता के भव्य और मनोहारी उपवन को अपनी प्रतिभा से सींचकर अलौकिक स्वरूप प्रदान किया।

कुंजबिहारी चौबे एवं गिरिवर दास वैष्णव की कवितायें राष्ट्रीय आंदोलन के दौर की हैं, इनमें राष्ट्रप्रेम की रचनाएं बेहद प्रभावी बनकर आई हैं। अंग्रेजों के शिकंजे में छटपटाता

भूमिका

अ-छत्तीसगढ़ी साहित्य की विकास यात्रा

संत कबीर के शिष्य संत धर्मदास की रचनाएं हमें लिपिबद्ध छत्तीसगढ़ी कविता के रूप में प्रथमतः मिलती हैं। इससे पूर्व किसी प्रभावी छत्तीसगढ़ी कवि को ऐसी जनस्वीकृति नहीं मिली। छिटपुट शिलालेखों में छत्तीसगढ़ी के प्रयोग उदाहरणार्थ मिलते हैं, मगर विधिवत काव्य ग्रन्थों का प्रणयन धर्मदान ने ही किया। न केवल कबीर पंथी जगत में इनकी रचनाएं पूजित हुई, बल्कि आम जन में भी धर्मदास की रचनाएं स्वीकृत हुईं। श्रुति परंपरा ने धर्मदास की रचनाओं का अभिरक्षण किया। लिपिबद्ध होकर ये रचनाएं पीढ़ियों के रूप में हमें परंपरा से जोड़ रही हैं।

धर्मदास के पूर्व छत्तीसगढ़ में गाथाओं का मायावी संसार भी बेहद समृद्ध रहा है। इन गाथाओं में प्रेम प्रधान तो थी हीं, धार्मिक और पौराणिक गाथाओं की समृद्ध श्रृंखला भी थी। नायक-नायिका के इर्द गिर्द घूमती प्रेम गाथाओं में उस दौर का धड़कता हुआ सामाजिक जीवन चित्रित है। साथ ही सामंतशाही के दौर में वर्जनाओं की गहरी खाई से बचकर निकल जाने में सफल नायिका और नायक के इर्द गिर्द घूमती गाथायें सरल सहज छत्तीसगढ़ी जीवन की व्याख्या भी प्रस्तुत करती हैं।

केवला रानी, अहिमन रानी, रेवा रानी की कथायें, ब्रांसगीतों में आज भी कही सुनी जाती हैं।

धार्मिक आख्यानों में रामकथा तथा पाण्डवों की कथा पर आधारित लोकगाथाओं का विविध रूप देखते ही बनता है। इस गाथाओं में जो क्षेपक कथायें आती हैं उनका छत्तीसगढ़ी रंग मुग्धकारी होता है। रामायण या महाभारत की कथा का छत्तीसगढ़ीकरण अंचल की कल्पनाशीलता को प्रमाणित करता है। अपने संदर्भों से जुड़ती हुई कथायें कथा की सर्वमान्य मुख्यधारा में जाकर ठीक उसी तरह मिल जाती है, जिस तरह गंगा में छोटी छोटी नदियाँ मिलती हैं।

यहाँ यह उल्लेख भी जरूरी है कि छत्तीसगढ़ में गाथाओं का अभिरक्षण जातियों से जुड़कर पनपी कलाओं ने किया है।

पंडवानी या रामकथा किसी विशेष जाति की संपदा नहीं है।

भक्ति से जुड़ी रचनाएं स्वाभाविक रूप से छत्तीसगढ़ में भी उत्तर भारत के विद्वानों के प्रभाव से उत्तरोत्तर समृद्ध हुई। छत्तीसगढ़ में उत्तर भारतीय विद्वानों का आवागमन रहा है।

दिशाबोधक सिद्ध हुई। केयूर भूषण तथा लखनलाल गुप्त के बाद डॉ. परदेशीराम वर्मा ने उपन्यास विधा को समृद्ध किया। छत्तीसगढ़ी की समतावादी दृष्टि और उदार प्रवृत्ति पर केन्द्रित डॉ. परदेशीराम वर्मा का उपन्यास ''आवा'' परिवर्तनकारी दौर का अभिनव उपन्यास है।

नाटक के क्षेत्र में डॉ. खूबचंद बघेल का नाटक ''ऊँच-नीच'' चर्चित है। उन्होने इसके अतिरिक्त तीन और नाटकों का लेखन किया। टिकेन्द्रनाथ टिकरहा, लोचनप्रसाद पाण्डे, डॉ. रामलाल कश्यप, शुकलाल प्रसाद पाण्डे, भूषण लाल तथा डॉ. परदेशीराम वर्मा की किताब ''मैं बइला नोहंव'' चर्चित हुई। श्री नंदकिशोर तिवारी कृत ''परेमा'' तथा कपिलनाथ कश्यप की किताब ''अंधियारी रात'' का विशेष महत्व है।

जीवनी तथा संस्मरण लेखन के साथ ही व्यंग्य विधा में भी छत्तीसगढ़ी में शनैः शनैः लेखन कार्य चल रहा है। छत्तीसगढ़ी भाषा में राज्य निर्माण के बाद लेखन की प्रवृत्ति बढ़ी है।

आगामी एक दशक छत्तीसगढ़ी भाषा की समृद्धि की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

-डॉ. तेजराम दिल्लीवार

ब-छत्तीसगढ़ी भाषा - एक परिचय

1. **स्वर** - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
2. **व्यंजन** -

क	ख	ग	घ		
च	छ	ज	झ		
ट	ठ	ड	ढ	ड़	ढ़
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	रर	ल	व		
स	ह				

3. **अनुस्वार** - ं
4. **अनुनासिक** ँ
5. छत्तीसगढ़ी भाषा के **सामान्य बोलचाल** व्यवहार में - श, ष, त्र, ज्ञ, क्ष, ऋ अक्षरों का **प्रयोग नहीं होता।**
6. श, ष के लिए - ''स'' (जैसे - सेस)
   ज्ञ के लिए - ''ग्य'' (जैसे - ग्यान)
   ए के लिए - ''अइ'' (जैसे ऐसन - अइसन)
   त्र के लिए - त्र (जैसे नेत्र - नेत्र)
   ऋ के लिए - रि (जैसे ऋतु - रितु)
   का प्रयोग होता है।
7. **वचन** -

छत्तीसगढ़ी में बहुवचन के लिए संज्ञा में प्रत्यय का उपयोग नहीं किया जाता, अपिंतु कुछ स्वतंत्र शब्दों का उपसर्ग की तरह प्रयोग किया जाता है। या फिर शब्दों की पुनरुक्ति के द्वारा बहुवचन का द्योतक होता है, जैसे -

सब बइला, बइला मन।

बहुवचन की रचना के ''मन'' शब्द का परसर्गवत् प्रयोग छत्तीसगढ़ी में बहुप्रचलित है, जैसे -

एकवचन	बहुवचन
गाड़ी	गाड़ी-मन
थारी	थारी-मन
मनुख	मनुख-मन
बोकरा	बोकरा-मन

भारत और शिकंजे से मुक्ति की तड़प लिये हमारा छत्तीसगढ़ इनकी रचनाओं में प्रतिबिंबित होता है।

''चल मोरे भइया बियासी के नागर'' यह गीत उठान में किसान जीवन की कठिनाईयों का गीत लगता है लेकिन इसकी अंतर्वस्तु से गुजरते हुए हमें अंग्रेजों के दमन से टूट रहे किसान की छवि दिखती है।

गया प्रसाद बसेड़िया ने शिव आराधना के गीत, छत्तीसगढ़ी मुहावरों को साधकर कुछ इस तरह लिखा कि उनके गीत जन जन में प्रचलित हो गए।

कोदूराम दलित और द्वारिकाप्रसाद तिवारी ''विप्र'' समकालीन कवि हैं। कोदूराम दलित की भाषा व्यंग्य कविताओं में बेहद प्रभावी हो उठी है। कमजोरियों पर प्रहार करने की अपनी विशिष्ट शैली के कारण दलित ने काव्य मंचों पर भी यश प्राप्त किया। यही वह दौर है जब लोकप्रिय कविता मंचों में छत्तीसगढ़ी की पदचाप सुनाई पड़ने लगी। द्वारिकाप्रसाद तिवारी ''विप्र'' की किसान जीवन पर केन्द्रित कविता, छत्तीसगढ़ी की अप्रतिम कविता है।

''धन धन रे मोर किसान'' यह कविता छत्तीसगढ़ के किसान को समर्पित ऐसी कविता है जिसमें हम किसान जीवन के दुर्लभ सूत्रों को पहली बार गीत के रुप में उतरते पाते हैं।

''तोला देखे रेहेंव रे'' यह कविता श्रृंगार रस की ऐसी कविता सिद्ध हुई जिसकी परंपरा आज भी छत्तीसगढ़ की कविता में हमें वैविध्य बिखेरती दिखती है। समकालीन कविता परिदृश्य पर चमक रहे प्राय: सभी कवियों ने विप्रजी के कौशल को नमन किया। उनके द्वारा प्रशस्त काव्यपथ पर आज के कवि चले और उन्हें मंजिल भी मिली।

''राम वनवास'' कृति के सर्जक ''बेटी के बिदा'' कविता से समकालीन काव्य परिदृश्य में धमक के साथ उपस्थित होने वाले पंडित श्यामलाल चतुर्वेदी ने गद्य लेखन में भी यश प्राप्त किया।

श्यामलाल चतुर्वेदी ही पहले प्रभावी कवि हैं जिन्होंने छत्तीसगढ़ी गद्य के विकास में भी भरपूर योगदान दिया। यहीं से हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी में समान रुप से लेखकीय अभिरुचि रखने के लिए चर्चित रचनाकारों का युग प्रारंभ होता है।

श्री नारायण लाल परमार, हरि ठाकुर ऐसे ही रचनाकार हैं जिन्होंने दोनों भाषाओं में लेखन किया। न केवल दोनों भाषाओं में बल्कि गद्य एवं पद्य में भी समान रुप से इनकी साधना पनपी। टिकेन्द्रनाथ टिकरहा, केयूर भूषण, नरेन्द देव वर्मा ने इस परंपरा को सींचा और समृद्ध किया। डॉ. विमलकुमार पाठक, दानेश्वर शर्मा, हनुमंत नायडू ने छत्तीसगढ़ी कविता में अभिनव प्रयोग और विषयगत विविधता का सूत्रपात किया। धुवराम वर्मा, ललित मोहन श्रीवास्तव इस दौर के अन्य प्रमुख कवि हैं।

इसके बाद का दौर विपुल लेखन और प्रयोग का ऐसा युग है जो किसी भाषा की समृद्धि के लिए आवश्यक होता है। पवन दीवान, रविशंकर शुक्ल, रघुवीर अग्रवाल पथिक, डॉ. विमल पाठक, लक्ष्मण मस्तूरिहा, रामेश्वर वैष्णव, बसंत दीवान, विनय कुमार पाठक और मुकुंद कौशल ने कविता में व्यापक प्रयोग कर इसे समृद्ध किया।

जनगीतों के सर्जक भगवतीलाल सेन अपने वैशिष्ट्य के कारण इस दौर में चर्चित हुए। सरल भाषा और मुहावरों के प्रयोग ने भगवतीलाल सेन को समकालीन छत्तीसगढ़ी कविता का प्रमुख कवि बनाया। डॉ. प्रभंजन शास्त्री की कृति ''बिन भांड़ी के अंगना'' ने छत्तीसगढ़ी कविता संसार में विशेष महत्व प्राप्त किया।

छत्तीसगढ़ी गद्य शिलालेखों में दिखाई तो पड़ता है किन्तु गद्यात्मक रचनाएँ 1950 के बाद ही देखने में आई।

1950 में छत्तीसगढ़ी की पत्रिका ''छत्तीसगढ़ी'' का संपादन मुक्तिदूत ने प्रारंभ किया। इस पत्रिका में गद्य रचनाएं लगातार प्रकाशित हुई। 1990 के बाद छत्तीसगढ़ी गद्य का विकास तेजी से हुआ। डॉ. सत्यभामा आड़िल का गद्य संकलन ''गोठ'' का इस संदर्भ में विशेष महत्व है। विशेषकर ''लोकाक्षर'' पत्रिका से गद्य के लिए प्रेरक वातावरण मिला।

हिन्दी कहानी में छत्तीसगढ़ के जीवन और परिदृश्य को लेकर अपने विशिष्ट प्रयोगों के लिए चर्चित कथाकार डॉ. परदेशीराम वर्मा ने ''हमला तंय झन भरमा जी'' कहानी लिखकर छत्तीसगढ़ी कहानी में संसार में अपनी उपस्थिति का अहसास कराया। बिरसपत के बिरसपत, डोरी, झालर, पकड़ आदि कहानियों के माध्यम से डॉ. परदेशीराम वर्मा ने छत्तीसगढ़ी कथा संसार में विशिष्ट स्थान बना लिया। कपिलनाथ कश्यप, पालेश्वर शर्मा, शिवशंकर शुक्ल, टिकेन्द्र टिकरिहा, केयूर भूषण, श्यामलाल चतुर्वेदी वरिष्ठ कथाकारों की अगली पीढ़ी के कथाकार डॉ. परदेशीराम वर्मा के समकालीन भावसिंह हिरवानी, डॉ. बिहारीलाल साहू, मंगल रवीन्द्र, रामलाल निषाद, ने कथा साहित्य में भरपूर योगदान दिया। आज छत्तीसगढ़ी कहानी का परिदृश्य बेहद प्रभावी और प्रेरक हो गया है। समय की चेतना मुखर हो रही है। उसी तरह ''दियना के अंजोर'' एवं ''मोंगरा'' उपन्यासों के लेखन से शिवशंकर की विशिष्ट यात्रा छत्तीसगढ़ी उपन्यास के लिए

कभी-कभी ''मनन'', गंज, अड़बड़, अब्बड़, निचट, सबो, जमो, जम्मो शब्द भी लगाए जाते हैं, जैसे -

लइका - गंज लइका
अड़बड़ लइका
अब्बड़ लइका
जम्मो लइका आदि।

8. लिंग -

छत्तीसगढ़ी में लिंग विधान अत्यधिक सरल है। **कुछ संज्ञाएं केवल पुल्लिंग होती हैं,** जैसे -

चांउर (चांवल), दसना (बिछौना)
पखना (पत्थर), फर (फल)
ओढ़ना (वस्त्र), दुजबर (जिसका विवाह पहले हो चुका है)
कुछ संज्ञाएं केवल स्त्रीलिंग होती हैं, जैसे -
छंड़वे (परित्यक्ता), बिहइ (ब्याहता)

कुछ अपवादों को छोड़कर सामान्य नियम यह है कि जिन संज्ञा शब्दों के अंत ''ई'' या ''त'' आते हैं, वे स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे -

चिरई (चिड़िया), भूसड़ी (मच्छर),
माटी (मिट्टी), लउड़ी (लाठी)
बात, रात, जोत (ज्योति)

उभयलिंग शब्द :-

संगी (सखी या साथी)
परानी (पति या पत्नी)
ज़ंवरिया (समवयस्क स्त्री या पुरुष)

छत्तीसगढ़ी पुल्लिंग संज्ञाओं को निम्न विधि से स्त्रीलिंग बनाया जाता है :-

''ई'' लगाकर -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
डोकरा	डोकरी

''इया'' लगाकर -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बुढ़वा	बुढ़िया
पंड़वा	पंड़िया

''इन'' या ''निन'' लगाकर -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बघवा	बघनिन
नाती	नतनिन
हांथी	हंथनिन
ठेठवार	ठेठवारिन
बरेठ	बरेठिन
लोहार	लोहारिन

''अइन'' लगाकर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
चौबे	चौबाइन
पंडित	पंडिताइन या पंडितानिन
दुबे	दुबइन

कतिपय पुल्लिंग संज्ञाओं के रुप अनियमित रहते हैं -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
ददा	दाई
भाई	भउजी
भांटो	दिदी
बोकरा	छेरी या बोकरी

9. **कारक-रचना:-**

संस्कृत के कारक ध्वनिह्रास के कारण क्षरित होते गए और छत्तीसगढ़ी में अपने मूल रुप के समीप पहुँच गए।

कारक रचना में निम्न **परसर्ग** प्रयुक्त होते हैं:-

	एकवचन	**बहुवचन**
कर्त्ता -	शून्य अथवा हर	मन अथवा मन-हर
कर्म -	का, या ला	मन-का या मन-ला
करण -	ले	मन-ले
संप्रदान -	का, ला, बर	मन-का, मन-ला, मन-बर
अपादान -	ले	मन-ले
संबंध -	के	मन-के
अधिकरण -	में या मा	मन में, मन मां

10. छत्तीसगढ़ी के विशेषण:- उदाहरण

मोटला (मोटा), करिया (काला), फिरंता (फिरने वाला), कचलोइया (कच्चा), तात (गरम), सांकुर (संकरा), बड़हर (धनी), दुब्बर (दुबला), लमचोची (लंबी चोंचवाली), दंत्तनिपोर (दांत दिखाने वाला)

सिठ्ठा (फीका), जुन्ना (पुराना), चेपटा (पिचका), बने (अच्छा), रोंठ (बड़ा), लाम (लंबा), पंडरा (धवल)

11. सर्वनाम:-

उत्तम पुरुष - में, मैं, हम

मध्यम पुरुष - तें, तैं

अन्य पुरुष - ओ ह, ओ मन

संबंध वाचक सर्वनाम - जे, ते, जऊन, कोन, कउने, काबर, कोनो मन

12. क्रिया:-

छत्तीसगढ़ी में सामान्य वर्तमान काल:-

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष -	में जात हौं, जाथौं	हमन् जात हन, जाथन
मध्यम पुरुष -	तें जात हस, जाथस	तुमन् जात हौ, जाथौ
अन्य पुरुष -	जो जात हे, जाथे	ओमन् जात हें, जाथें

सामान्य भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष -	में देखेवं	हमन् देखेन
मध्यम पुरुष -	तें देखे	तुमन् देखेव
अन्य पुरुष -	ओहर देखिस	ओमन् देखिन

सामान्य भविष्यत्

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष -	में चलहूँ	हमन् चलबो, चलबोन
मध्यम पुरुष -	तें चलबे	तूमन् चलहू, चलिहौ
अन्य पुरुष -	ओहर चलही	ओमन् चलहीं, चलिहैं

13. छत्तीसगढ़ी अव्यय:-

अब, जब, आज, काल, नरो (नरसों), बिहनियां, संजहा, बेरा, आसो, तुरुत, कगरा, नीचट, सुद्धा, इहाँ, उहाँ, ठउका।

14. छत्तीसगढ़ी कृदंत - रेंगत मनखे, बोहावत पानी, करे काम, सुनके, चला चली, लहारन बटोरन, लिपन पोतन, रोवत उठिस, खात जात हे, खानपान, कर डारन, जाग उठन।

15. छत्तीसगढ़ी शब्दकोश :-

अटकरना - अनुमान लगाना

अटर्रा - संतरे के जैसा, खट्टे-मीठे स्वाद वाला फल

अरझई - उलझने की क्रिया

अटाटूट - अपार

अथान - अचार

अनदेखनी - ईर्ष्या, जलन

अधहरा - कंडे की आग

अनबनक - बिगाड़, अनबन

अरोना - लटकाना, टांगना

अलकर - कष्टदायक

अलकरहा - बेढंगा

इंकर - इनका

उटकहा - ताना मारने वाला

एक ठउर - एक जगह

कोटना - पशुओं को चारा पानी देने के लिए पत्थर या सीमेंट का बना चौकोर पात्र

गउरा - भगवान शिव

गउकिन - गाय की कसम

गोंटर्रा - बड़े आकार का कंकड़

छतरंगी - दरी

जंउरिहा - समवयस्क

टकरहा - आदी, अभ्यस्त

बजरहिन - बाजार जाने वाली

तिजहारिन - तीजा पर्व में सम्मिलित होने वाली, हरतालिका व्रत रखने वाली।

दसना - बिस्तर, बिछौना

निमगा - शुद्ध

मंगरोहन - विवाह मंडप में गड़ाया जाने वाला प्रतीकात्मक पुतला-पुतली

रंधनी - रसोई घर

रंधाना - भोजन पक जाना

छत्तीसगढ़ी भाषा के विभिन्न रूपों की तुलनात्मक शब्द रचना

हिन्दी	मानक छत्तीसगढ़ी रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर		रायगढ़	लरिया	खल्टाही	सुरगुजिहा	बस्तरिहा (हल्बी)
अच्छा	अच्छा,	निक	अच्छा	भल	बने	नगद	नँगत
इधर	येती,	येकोती	ऐ-अंग	इयाड़े	एतीबर	एकती	एबट
और	अउ,	आउ, अउर	अउर	आउरी	अऊर	अउर	आउर
कल	काल,	काली कल्ह	काल्ह	काली	बिहानदिन	काइल	काल
खरीदना	बिसाना,	बिसाना	बिसोना	कीणना	बिसाना	बिसाना	लेइना
नमक	नून	नून	नून	नंण	नून	नोन	नोन
गर्दन	घेंच	घेंचा	टोंटा	बेक		ढेंटू	टोहरा
घरजमाई	घरजियां	घरजियां	घरजींहा	घरजोंई	लमसेना दंमाद	घरजींहा	घरजिंहा
नीचे	खाल्हे	खाले	खाल्हे	तर	खाले	खाल्हे	खाले
पकाना	रांधना	रांधना	चुरौना	रांधणा	रांदना	रांधना	रांधना
पिता	बाप, ददा	ककाबाप	ददा, बुआ	वापा	ददा	दाऊ	बाबा
बच्चा	लइका	लइका	पीला	छुआ पीला	लैका	छौवा	पीला
बहनोई	भांटो	भाटो	भांटो	जोईं	भांटो	भाटो	भांटो
हल	नांगर	नांगर	नांगर	हल	नांगर	हर नागर	नांगर
सड़क	रद्दा	रसदा	डहर	डांड	रद्दा	संडक	बाट
साड़ी	लुगरा	लुगड़ा	लुगा	लुगा	लुगरा	लुगा	लुगा
मत	झन	झन	झन	नाईं	झिन	झिन	नी
बालबच्चे	लइका बच्चा	लइका बच्चा	पीला पिचका	पीला पिचका	टूरी टूरा	लरिका छोआ	पीला झीला
मा	दाई दिदी	दाई	दोई, माँ	बोऊ	दाई	दाई	दाई आया
नाटा	बुटरा	बुटरा	बांगरा	बाबन	बटवा	नटवा	गठिया
ऐसा	ऐसन अइसे	ऐसन अइसे	ऐ-सन	इंती	अइसन	ऐसा	असन
काला	करिया	कोदई रंग	करिया	कला	करिया	करिया	करैया

संत धर्मदास

जन्म तिथि -संवत् 1452 परलोक गमन -संवत् 1569

जन्म स्थान - बांधवगढ़ कबीर से दीक्षा ग्रहण-संवत् 1520

कबीर की शिष्य परंपरा में धर्मदास का विशिष्ट स्थान है। उनकी वाणी सन्त मत की अमूल्य निधि है। ये जाति के वैश्य थे। कबीर आदि सन्तों के काव्य में उच्च वर्णों और धर्मों के प्रति जो आक्रोश का भाव मिलता है और कर्मकाण्डों के प्रति जो व्यंग प्रकट हुआ है, वह धर्मदास के काव्य में विरल ही है। कबीर के संपर्क में आने से पहले धर्मदास के मन में भी पूजापाठ और कर्मकाण्डों के प्रति विशेष आस्था थी। एक दिन वे अपनी पत्नी आमिन के साथ हवन कर रहे थे, तभी कबीर आ पहुँचे, और बोले - धर्मदास तुम बड़े पापी हो, जरा इन लकड़ियों को तोड़कर देखो, जो तुम हवन में जला रहे हो। ये कीड़ों से भरी पड़ी हैं। तुम कितने जीवों की हत्या कर रहे हो ? और किस बात के लिए ? कबीर के संवाद का धर्मदास और आमिन पर गहरा असर हुआ। कबीर ने युगल दम्पत्ति को 'नाम' प्रदान किया। धर्मदास ने कबीर की संगति का लाभ उठाया, 'नाम' का अभ्यास किया और कबीर ने भी उन्हें अपना शिष्य बना लिया।

संत धर्मदास के पद :

(1)

गुरू पइयां लागवं नाम लखा दीजो हो ॥ टेक ॥
जनम-जनम का सोया मनुवा, सब्दन मार जगा दीजो हो।
घट अंधियार नैन नहिं सूझे, ज्ञान का दीप जगा दीजो हो।
विष की लहर उठत घट अंतर, अमृत बूंद चुंवाय दीजो हो।
गहिरी नदिया अगम बोहाय, खेय के पार लगा दीजो हो।
धरमदास की अरंज गुसाई, अब की पार लगाय दीजो हो।

भावार्थ : धर्मदास के अनुसार गुरु स्थूल संसार में तो जरूरी है किन्तु अन्तर के मण्डलों के लिए साधक को उसकी कदम कदम पर आवश्यकता पड़ती है। बाहर गुरु जिज्ञासु को 'नाम' देकर इसे अंतरा मार्ग का रहस्य बतलाता है, उसकी आत्मा को 'शब्द' से जोड़ता है और उसके हृदय में प्रेम और भक्ति जागृत करता है। अपनी असीम आत्मिक शक्ति द्वारा इस मार्ग पर चलने, अभ्यास कर संसार के आकर्षणों और परेशानियों को दृढ़तापूर्वक सामना करने की शक्ति देता है। धर्मदास ने संसार की झंझटों की तुलना विष और नदी से की है तथा सद्गुरु से अमृतवर्षा करने तथा भवसागर से पार करने की

10. छत्तीसगढ़ी के विशेषण:- उदाहरण

मोटला (मोटा), करिया (काला), फिरंता (फिरने वाला), कचलोइया (कच्चा), तात (गरम), सांकुर (संकरा), बड़हर (धनी), दुब्बर (दुबला), लमचोची (लंबी चोंचवाली), दंतनिपोर (दांत दिखाने वाला)

सिट्ठा (फीका), जुन्ना (पुराना), चेपटा (पिचका), बने (अच्छा), रोंठ (बड़ा), लाम (लंबा), पंडरा (धवल)

11. सर्वनाम:-

उत्तम पुरुष - में, मैं, हम

मध्यम पुरुष - तें, तैं

अन्य पुरुष - ओ ह, ओ मन

संबंध वाचक सर्वनाम - जे, ते, जऊन, कोन, कउने, काबर, कोनो मन

12. क्रिया:-

छत्तीसगढ़ी में सामान्य वर्तमान काल:-

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष -	में जात हौं, जाथौं	हमन् जात हन, जाथन
मध्यम पुरुष -	तें जात हस, जाथस	तुमन् जात हौ, जाथौ
अन्य पुरुष -	जो जात हे, जाथे	ओमन् जात हें, जाथें

सामान्य भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष -	में देखेवं	हमन् देखेन
मध्यम पुरुष -	तें देखे	तुमन् देखेव
अन्य पुरुष -	ओहर देखिस	ओमन् देखिन

सामान्य भविष्यत्

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष -	में चलहूँ	हमन् चलबो, चलबोन
मध्यम पुरुष -	तें चलबे	तूमन् चलहू, चलिहौ
अन्य पुरुष -	ओहर चलही	ओमन् चलहीं, चलिहैं

13. छत्तीसगढ़ी अव्यय:-

अब, जब, आज, काल, नरो (नरसों), बिहनियां, संजहा, बेरा, आसो, तुरुत, बगरा, तीचट, सुग्घा, इहाँ, उहाँ, ठउका।

14. छत्तीसगढ़ी कृदंत - रेंगत मनखे, बोहावत पानी, करे काम, सुनके, चला चली, लहारन बटोरन, लिपन पोतन, रोवत उठिस, खात जात हे, खानपान, कर डारन, जाग उठन।

15. छत्तीसगढ़ी शब्दकोश :-

अटकरना - अनुमान लगाना

अटर्रा - संतरे के जैसा, खट्टे-मीठे स्वाद वाला फल

अरझई - उलझने की क्रिया

अटाटूट - अपार

अथान - अचार

अनदेखनी - ईर्ष्या, जलन

अधहरा - कंडे की आग

अनबनक - बिगाड़, अनबन

अरोना - लटकाना, टांगना

अलकर - कष्टदायक

अलकरहा - बेढंगा

इंकर - इनका

उटकहा - ताना मारने वाला

एक ठउर - एक जगह

कोटना - पशुओं को चारा पानी देने के लिए पत्थर या सीमेंट का बना चौकोर पात्र

गउरा - भगवान शिव

गउकिन - गाय की कसम

गोंटर्रा - बड़े आकार का कंकड़

छतरंगी - दरी

जंउरिहा - समवयस्क

टकरहा - आदी, अभ्यस्त

बजरहिन - बाजार जाने वाली

तिजहारिन - तीजा पर्व में सम्मिलित होने वाली, हरतालिका व्रत रखने वाली।

दसना - बिस्तर, बिछौना

निमगा - शुद्ध

मंगरोहन - विवाह मंडप में गड़ाया जाने वाला प्रतीकात्मक पुतला-पुतली

रंधनी - रसोई घर

रंधाना - भोजन पक जाना

गुहार लगाई है। धर्मदास के अनुसार सद्गुरु अपनी परम चेतना 'शब्द-रुप' में हमेश शिष्य के साथ रहता है और अंतस् की कठिनाइयों और खतरों से उसकी रक्षा करता है

(2)

नैनन आगे ख्याल घनेरा।
जेहि कारन जग डौलत भरमै, सो साहेब घट लीन्ह बसेरा।
का संझा का प्रात सबेरा, जहं देखूं तहं साहेब मेरा।
अरथ-उरथ बिच लगन लगी है, साहेब घट मं कर लीन डेरा।
साहेब कबीर एक माला दीन्हा, धरमदास घट ही बिच फेरा।

भावार्थ : धर्मदास के मत में पोथी पुरान और मंदिर मस्जिद प्रभु-साक्षात्कार के मा में संदेह पैदा करते हैं। जिज्ञासु को आत्मानुभव अर्थात आत्म-साक्षात्कार करने नह देते। धर्मदास ने कहा है कि मेरा गुरु ही मेरा साहेब है जो मेरे घट में समाये हुए है। सुबह शाम जब देखूं, जहां देखूं, मुझे मेरा साहेब दिखता है।

(3)

भजन करौ भाई रे, अइसन तन पायके।
नहिं रहे लंकापति रावन, नहिं रहे दुर्योधन राई रे।
मात पिता सुत ठाढ़े भाई बंद, आयो जमराज पकर लै जाही रे।
लाल खंभ पर देत ताड़ना, बिन सतगुरू को होत सहाई रे।
धरमदास के अरज गोसांई, नाम कबीर कहौ गोहराई रे।

भावार्थ : धर्मदास ने कहा है कि हमें मनुष्य तन बड़े भाग्य से मिला है अतः इ पाकर हम प्रभु का गुणगान करें। मन में अहंकार न पालें। अंहकारी का अंत एक दि निश्चित है। इस संसार में कोई किसी का नहीं है। माता-पिता, बंधु-बांधव सबको ए दिन यमराज ले जायेगा। एकमात्र प्रभु ही हमारा रक्षक हो सकता है। हम 'शब्द' क इस्तेमाल करें और गुरुभक्ति तथा गुरु सेवा से प्रभु को प्राप्त करें।

प्रश्नावली

(1) निम्नलिखित पंक्तियों को समझाइये।

(1) विष की लहर उठत घट अंतर, अमृत बूंद चुंवाय दीजो हो।
गहिरि नदिया अगम बोहाय, खेय के पार लगा दीजो हो ॥

(2) लाल खंभ पर देत ताड़ना, बिन सतगुरु की होत सहाई रे।
धरमदास के अरज गोसाई, नाम कबीर कहौ गोहराई रे ॥

(2) संत काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों की दृष्टि में रखते हुए धर्मदास के पदों की विवेचना कीजिये।

(3) लघुउत्तरीय प्रश्न - टिप्पणी लिखिये।

(1) संत काव्य में गुरु महिमा

(2) धर्मदास काव्य का भाव पक्ष

(4) अतिलघुउत्तरीय प्रश्न -

(1) संत शब्द का एक वाक्य में अर्थ बताइए।

(2) धर्मदास के गुरु कौन थे ?

(3) धर्मदास की पत्नी का क्या नाम था ? आमिन

(4) 'भरमय' का शुद्ध हिन्दी रूप लिखिये।

(5) संत धर्मदास का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

लखनलाल गुप्त

छत्तीसगढ़ी साहित्य के विकास में लखनलाल गुप्त का अहम स्थान है। उनका जन्म 1 जुलाई 1933 को बिलासपुर में हुआ। उन्होने मैट्रिक की परीक्षा वाराणसी में रहकर पास की थी। एम.काम. और एल.एल बी. की परीक्षायें उन्होने पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर से पास की। लखनलाल गुप्त की प्रतिभा बहुआयामी है। छत्तीसगढ़ी में उन्होने कहानी, नाटक, कविता, निबंध आदि सभी विधाओं पर अपनी लेखनी को गति दी। उन्होंने उपन्यास भी लिखे हैं। उनके ''चन्दा अमरित बरसाइस'' उपन्यास (1965) की छत्तीसगढ़ी के द्वितीय उपन्यास होने का गौरव प्राप्त है। इस उपन्यास के सम्बन्ध में मुकुटधर पाण्डे का मत है - 'चन्दा अमरित बरसाईस' यथा नाम तथा गुण हैं। पद-पद पर अमृत टपता है। कथानक सरल और सहज है। आंचलिक जनजीवन का चित्रण स्वाभाविक बन पड़ा है।

लखनलाल गुप्त की प्रकाशित पुस्तकें :-

काव्य - सैनिक गान, सत्यमेव जयते, पद्यप्रभा, संझौती के बेरा

उपन्यास - चन्दा अमरित बरसाइस

कहानी/एकांकी संग्रह - सरग ले डोला आइस

आत्मकथा - सुरता के सोन किरन

बाल साहित्य - हाथी घोड़ा पालकी, छत्तीसगढ़ी बाल नाट्य

नाटक - जाग छत्तीसगढ़ जाग

सोन-पान

जइसनहें गांव ले सोनपान आइस, लइकन खुशी मं नाचे लगिन। ये दे सोनपान आगे, आज तो दशहरा मनाय जाबोन गा।

येती बिहनिया ले घर मं खड्क, तरवार ल माजे के काम घलो सुरू रहय, आज घरों घर खड्ग के पूजा होथय। ये दिन ल हिन्दू मन साल भरले अगोरत रहिथंय। येला बड़ पवित्र दिन माने जाथे, काहे के, ये दिना आर्य के जीत के पताका अनार्थ के किल्ला मं फहराये रहिस हे। ये वही सुभ-दिन आय जउन दिन भगवान राम हर रावण ला खतम कर आर्य संस्कृति के रक्षा करे रहिन।

दशहरा के ये सुघ्घर तिथि अघातेच सुहावना समे में पड़थय। ये वो समे होथे जब बरसा रितु के धड़धड़ात गरजन, शरद रितु के डर से डर मं भागे लगथय। अकास सुच्छ अउ मौसम सुखत होथय। मारग बिन पाखी के हो जाथै, लेख जेखर ले जात्रा करयिन व्यापारी मन ल जातरा करे में अड़चन नहीं परय। नवा व्यापारी मन के उखर धन्धा कारोबार के सिरी गनेश यही सुभ-बेला मं होथय। खेतिहर किसान अपन खेतन मं बीजहा बोये के काम यही दिना ले सुरू कर देथय।

सही मं दशहरा आज भगवान राम के राक्षसी रावण उपर अलौकिक बिजय के यादगार मं मनाय जाथय। येखर दस दिन पहिली अउ कोनो कोनो एक महिना आघू ले रामलीला सुरू होजय। ये लीला महात्मा तुलसीदास के 'रामचरित मानस' के आधार मं खेले जाथय। ये लीला मं राम के जीवन के जमो उतार चढ़ाव के जिन्दगानी के लीला करथय। कोनो कोनो तो सिरिफ मानस के अखण्ड कीरतन होथय।

हमर छत्तीसगढ़ मं तो रावण के पुतला जघा जघा जलाय जाथय। बिलासपुर के सनीचरी पड़ाव में रावण, कुम्भकरण अउ मेघनाथ तीनों के बड़े बड़े बांस के खपची कमचिल मं बने पुतला ला जलाथंय। यही बिना राम के विजय हो जाय के बाद यही रात राम, लक्ष्मण, सीता अउ हनुमानजी के बने मूर्ति ला सिंहासन मं बइठार के सहर के कई हिस्सा मं घुमाय जाथय। जघा जघा उंखर आरती उतारे जाथय। कतको जघा दसमी के दूसर दिन 'भरत-मिलाप' के उत्सव मनाय जाथे। प्रयाग नगरी मं एक साल महूं ये उत्सव देखे गय रहेंव। उंहाके बड़े चौराहा म राम लक्ष्मिन अउ सीता के मानव मूर्ति सिंहासन मं विराजमान होके आवत रहिस दूसर कोती ले भरत, शत्रुघन के मानव मूर्ति झांकी आवत दिखाई परिस। चौगड्डा के बीच मं सुन्दर सजे सजाय मन्डप बने रहिस जउन रंगबिरंगी बिजली के रोशनी से चका चौंध करत रहिस यही बेरा चारों भाई के मिल भेंट होथय। मिल-भेंट के दृश्य हा अघोतेव नीक लगिस। भरत के नंगा पाव दउड़त आना, अऊ राम के चरन मं गिर परना, अऊ राम ल गिरत देख भरत अपन दुन्नों भुजा मं भर लेना, केतके सुख जनाथय कै सीन ल देख कै। लाखों अदमी के भीड़ जब ये दृश्य ला देखतय तौ ताली के जनामना नगाड़ा बाज उठथय। भगवान राम के जय जयगार के साथ के ये मिलाप के काम सम्पन्न होथय। येखर दूसर दिन राजगद्दी उत्सव बनाय जाथय। ये उछाव घलौं आनन्द के साथ जोर सोर से बनाय जाथय। ये उछाव घलौं आनन्द के साथ जोर सोर से बनाय जाथय।

राम राज्य बैठे तिरलोका। हर्षित भये गये सब लोगा॥

के पाठ करत हुए यही दिना राम के 'राजतिलक' किये जाथय। राज्यभिषेक के बाद, आनन्द उछाव के साथ रामलीला के समापन होईस।

नवरात मनइया मन नव दिन ले उपास रहिंथय। उंखर विश्वास है के ये समै मं जउन

अनुष्ठान होथय तेखर बड़ फायदा हौथय। काहे के, संयम मं रहे के कारन, रितु परिवर्तन होये के कारन, आने वाला कष्ट व्याधि से अनुष्ठान करइया बचे रहिथय, दूसर हवन अउ यज्ञ के धुंवा ले हवा सुद्द हो जाथय, जेखर कारन किसम किसम के रोग राई के समाप्ति हो जाथय। खराब हवा ल बने करे खाती हवन सबले बढ़िया उपाय आय। येखरे सेती हमार जुन्ना रिसी मुनी मन येखर बर जादा जोर दिये हैं।

दशहरा मं बंगाली मन दुर्गा-पूजा के उत्सव अघातेच धूम-धाम ले मनाथय इमन राम ले जादा राम ल विजय देवइया 'शक्ति' भगवती दुर्गा के पूजा अघातेव मन लगा के करथंय। आजकल तो बिलासपुर घलो मं ये साल तीस-पैतीस ठो दुर्गा के मूर्ति बइठारे रहिन। सबो जघा के सजावट अउ रोशनी तो देखै के लाइक रहिस। येखर पूजा बड़ श्रद्धा के साथ करथंय, अउ दशहरा के दिन रतिहा मं गावत बजावत ओखर संग रिकम रिकम के झांकी सजाय, बड़ उछाव-मंगल मनावत मूर्ति मन ला अरपा नदिया पचरीघाट मं सराथंय। ये क्रम ये दिना रात भर चलत रहिथय। अष्टमी अउ नवमी के दिन कई जघा नाटक घलौ खेले जाथय।

दशहरा परब क्षत्री मनके माने जाथय, पर आज पूरा देस के जम्मो मनखे येला राष्ट्रीय परव मानके मनाथंय। कोनों नव दुर्गा के कारन, कोनो वीर पूजा के कारन कोनो राम के उपासना के कारन, व्यापारी अपन बेपार के कारन, अउ कतको झन रमायन के पाठ करके जन-जागरन कराथंय।

छत्तीसगढ़ मं संझौती के बेरा दशहरा के दिन नवा पोसाक पहिन के लइका सियान जमो झिन गाजा बाजा के सगे जरन तिरन रावन के पुतला जलाशय पहुँच जाथय। सबके साम्हू मं पुतला जलाय जाथय जेखर पहिले सोनपान के पूजा होथय अऊ सोनपान ल जमोझन अपन अपन हाथ मं रखथै। सबले पहिली भगवान ल सोनपान जमौझन अरपित करथंय। येखर बाद छोटे बड़े सोनपान भेंटकर के बाद मिल-भेंट करथय। सही मं विजय के चिन्हारी के रूप मं दिये जाथय। काहे के कुँवार सुदी दसमी मं नक्षत्र के उत्ती हाये मं विजय नावंके काल होथय जउन सब कामना ला सिद्ध करने वाला होथय। यही दिना भगवान राम हर प्रवर्षणा गिरि ले प्रस्थान करके रावण जइसे बलशाली शत्रु उपर विजय हासिल करिस। यही दसमी के दिन वीर पान्डव मन अन्यायी कौरव मनसो महाभारत के युध शुरू करीन अउ आखिरी मं यही विजया के परताप से विजय सिरी हर विजय के माला पहिनाईस यही तो पवित्र दिन आय जउन दिन देवराज इन्द्र हर प्रयान के दनुजेन्द्र वृत्रासुर ल हरायइस। कहे के मतलब ये विजया दशमी या दशहरा के तिथि आर्य संस्कृति मं अपन साख महत्तम रखथय, जेखर चिन्हारी के रूप मं हमन एक दूसर ला सोनपान देके अपन जुग-जुग ले चले आत माता के पूजा, पिता के पूजा अउ शक्ति के पूजा ला अपन अपन मन मं धारन करथंन।

संकलित पाठ के सम्बन्ध में :- अन्य प्रान्तों की तरह छत्तीसगढ़ में भी दशहरा पर्व पूरे हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। शरद ऋतु आते ही धरा पंकरहित हो जाती है। खेत खलिहान में धान की हरी हरी फसलें लहलहाने लगती हैं, तब गांव-गांव में विजयादशमी की तैयारी शुरू होती है। प्रस्तुत निबंध में पश्चिम बंगाल आदि प्रान्तों में मनाये जाने वाली विजयादशमी का जिक्र हुआ है। देश के अलग-अलग भाग में और अलग-अलग रूप में यह पर्व मनाया जाता है, किन्तु सभी का उद्देश्य एक जैसा होता है - अनार्य पर आर्य की, असत्य पर सत्य की विजय। छत्तीसगढ़ में इस दिन घर-घर सोनपान बांटा जाता है जिसे पाकर स्त्री पुरुष, बच्चे-बूढ़े सभी के मन में उमंग छा जाती है। प्रस्तुत निबंध की भाषा सरल, सहज है। शब्दों में कसावट है।

प्रश्नावली

(1) छत्तीसगढ़ी निबंध के विकास में लखनलाल गुप्त का स्थान व्यक्त कीजिये।

(2) छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल में मनाये जाने वाली विजया दशमी की तुलना कीजिए।

(3) निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिये।

(1) लखनलाल गुप्त की भाषा शैली।

(2) छत्तीसगढ़ में मनाये जाने वाले दशहरे पर्व की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि।

(3) विजयादशमी का सामाजिक महत्व।

(4) अतिलघुउत्तरीय प्रश्न -

(1) छत्तीसगढ़ी में 'दशहरा' शब्द का अपभ्रंश रूप बताइए।

(2) 'भरत-मिलाप' में भरत का मिलन किससे होता है ?

(3) 'जम्मो' शब्द का एकवचन बताइए।

(4) छत्तीसगढ़ी के 'परब' शब्द का हिन्दी रूप ज्ञात कीजिये।

(5) 'कमचिल' का हिन्दी शब्द लिखिए।

सत्यभामा आड़िल

जन्म स्थान : ग्राम पन्दर, जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़

तिथि : 1 जनवरी 1944

शिक्षा : एम.ए., पी.एच-डी.

सम्प्रति : प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय दूधाधारी बजरंग महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रायपुर।

प्रकाशित साहित्यिक कृतियाँ :

काव्य (हिन्दी) : निःशब्द सृजन, क्वांर की दुपहरी, काला सूरज

उपन्यास (हिन्दी): प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक, एक पुरुष

नाटक(हिन्दी) : बुतखाना, वंशनाम, अभिशप्ता

छत्तीसगढ़ी कथा साहित्य : गोठ, सउत कथा

शोध प्रबन्ध : सन्त धर्मदास : व्यक्तित्व व कृतित्व
निदेर्शक- डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र

सन्दर्भ ग्रंथ : 1. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य और नव जागरण
2. छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति की जमीन
3. छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य।

म.प्र. शासन पंचायत विभाग द्वारा सन् 1976 में आपके 'क्वांर की दुपहरी' काव्य पुरस्कृत हो चुका है। आपको पंडित शारदा प्रसाद तिवारी सम्मान तथा ग्रामभारती सम्मान से भी नवाजा जा चुका है। आपकी छत्तीसगढ़ी रचनाओं में माटी की सोंधी महक है उसमें अपने समाज को समझने, समझाने और बेहतर रूप में बदलने की बौद्धिक कोशिश निहित हैं।

सीख सीख के गोठ

हमर छत्तीसगढ़ी संस्कृति मां बात-बात मां सीख देय के रिवाज हावय ? गांव के सियान मन हाना जोर-जोर के अपन बात ल कइथें। अउ छोटे उमर वाले मन ला सीख देथें। अगर हमर सियान मन के गोठ ल, ऊँखर सीख ल गांठ बांध के धरबो, त हमर बहुत अकन काम ह सरल हो जही। हमन समाज के भीतर रइथन। चार झन के बीच मां रइथन। संभल के नई चलबो, सियान मनके सीख ल नई गुनबो, त कइसे बनही। कतेक सुन्दर मरजाद के बात कइथे -

''पर तिरिया के मुख नइ देखौ
फूटे बंधवा के पानी नई पियौ''।

एमा बड़ सचाई हावय। ए बात ला मन में राख के काम करबो, त हमर जिनगी मं अड़चन नइ आवय, आपसी बेवहार मं घलो हमन ल कतकौन बात के ख्याल रखे ले पड़थे, जइसे-

''बिन आदर के पहुना।
बिन आदर घर जाय
गोड़ धोय परछी मं बइठै
सूरा बरोबर खाय।''

कथैं, बिन बुलाए पहुना बन के झन जावय जहाँ आदर नइ मिलय, मान, गउन नइ होवय, उंहा झन जाय। पइसा हाथ में आइस तहां ले फोकट-फोकट खरचा ऊपर खरचा। जइसे चांउर घर मं बेहिसाब पकावथे-फेंकथे। अइसना फिजूलखर्ची ल रोके बर, हमर सियान मन गौडियाथैं -

''तेली घर तैल होथे।
त पहाड़ ल नइ पोतै।''

कबीर साहेब ह कहे है - गरीब आदमी के आह ह झट लगथे। छत्तीसगढ़ में कबीर के प्रभाव बहुत है। सियान मन कइथें-

''पीठ ल मार ले
पेट ल झन मार।''

जउन ह बइद के काम नइ सिखेये, डाक्टरी नइ पढ़ेये अउ अपन मन के इलाज करथे, तउन ह खतरनाक बात ए ओकरे सेती कइथें -

''अड़हन बइद परानघातिका''

सियान मन के सीख के गोठ मा, - हमला का करना चाही, का नइ करना चाही, सगुन-असगुन बात के संकेत मिलथे। बेटा ह खाय बर बइठथे अउ महतारी ह कहूं परसथे, त दू कउंरा जादा खाना परस देथे। बेटा ह खिसियाथे, त महतारी ह हांस के कइथे -

''माता के परसे
अउ मेघा के बरसे।''

अब्बड़ सोच समझ के हमला गुरु बनाय के ये। जइसे पानी ल छान छान के पीथे ओइसने -

''गुरु बनावै जान के
पानी पीवै छान के।''

जब घर के मुखिया ह तास खेले मं मस्त होथे, तब खेती अउ धान के नास हो जथे।

अइसना सीख के गौठ है -

''खेती धन के नास,
जब खेलै गोसइंया तास।''

आदमी ह मेहनत करथे तब कुछु उपजथे, मिलथे, ओकरे सेती कहे गे हे -

''खातू पड़े तो खेती
नई ते नदिया कै रेती।''

अपन करम ल दोस देय के आदत हे हमर। हमन अपन गलती ल नइ देखन -

''चलनी मं दूध दुहै
करम ल दोस देय।''

आजकल के साधु मन के बारे में कइथे -

''गली-गली में साधु रेंगे
संत फुकावौ कान
चोला तरे त झन तरै
नरियर धोती ले काम''

साधु पंडा मन ल नरियर धोती से मतलब हे, हमला मुक्ति मिलय चाहे नइ मिलय। आदमी ल अगर सांति अऊ आराम चाही, त एक बात के ख्याल रखय -

''अपन नींद सौवे
अउ अपन नींद उठै।''

मनखे ह दूसर के बुराई ल झट देखथे। अपन दोस डहार ओखर आंखी नइ जाय। दूसर के दोस अउ गलती ल देखै के पहिली अपन भीतर के दोस ल देखय -

''अपने पेट ल देखे बर नइए,
दूसरे के पेट दिखा जथै।
अपन टोटा ल देखे नहिं
आन के फूला ल हांसथे।''

हमन ला चाही कि हमन खुद काम करन, तकलीफ झेलन, तब हम ला वो काम के बजन मालूम होही। खाली बइठे-बइठे आलोचना करे ले कुछु नइ होवय -

''अपन मरे बिन सरग नइ दिखे।''

अपन काम के बेरा दउड़ दउड़ के आही, अऊ हमर काम के बेरा टरक जाही। अइसना आदमी संसार मां बहुत मिलथे ओकरे सेती कैहै गे हे -

''आइस भई लरकू।
ठउके के बेर टरकू''

अऊ

''खाय बेरा हरक देय।
अऊ बूता के बेरा टरक देय।''

अपन घर में जऊन हालत हे, ओइसने ढंग के हमला पहिने ओढ़े के ये, खाये पिये के ये। ओमे कुछु सरम के बात नोहय। देखावा झन करय। या फेर अपन ल छोटे झन सोचय -

''आज के बासी संग काल के साग,
अपन घर मं, का के लाज।''

छोटे काम करे ले या बिना मतलब के काम करे ले बड़े काम ह सिद्ध नइ होवय, ओकरे सेती कहे गे है -

''ओरवांती के पानी
बरेड़ी में नइ चढ़ाय''

सियान मन के सीख हावय -

''कमाना कमिया असन
रहा राजा असन''

मानो कमाय के बेरा नौकर सही डट के काम कर, अऊ राजा असन सान से रह। माने ककरो आगु मूड़ झन नवा। करम गति माने भाग। रेखा ह आदमी के काम ले बनथे, अइसना काम करही आदमी ह, ओइसने ओखर बनथे -

''करम ले करम।''

ककरो भला करबो, ओखर अड़चन मां काम आबो, तेला कोनो सुरता नइ करय। ओखर भला करत-करत कहूँ हमर ले कुछू गलती होगे, त नाव धरही। ओखरे सेती अइसना मानव सुभाव के बारे में सियान मन कहे हे-

''खेलाय कुदाय नावं नहि
गिराव पराय नांव।''

अइसना सीख के गोठ ह हमर जिनगी में काम आथे। मानव सुभाव के रूप अउ हावय-जलन, ईरखा के मारे अपन स्वारथ साधे बर, दूसर के बुराई कर दूसर बर खांचा खोदथे, अइसन मन ल भगवान ह देखथे बुराई करइया खुदे एक दिन गड्डा मं गिर जथे।

''जेहर दूसर बर खंधवा कोड़थे
तेहर अपने बोजाथे''

एखर से हमला सीख मिलथे कि दूसर के बुरा होय के नइ सोचना चाही।

अइसना माने जाथे कि घर मं औरत के जात के चलही, अऊ मरद ह कुछु नइ

बोलय, तब ओ घर ह घर असन नइ रहय, काबर कि तिरिया मन के कथा ल सबो जानथे, छिन-छिन मं लड़इ झगरा करथें। ए नारी सुभाव के बात ल सियान मन हाना जोर के कइथें -

"जेकर घर में डउकी सियान
तेकर घर नइ कटे बिहान।"

अइसना गोठ सुनके नारी मन ल कुछु सीखे के ये। अपन सुभाव ल सुधारे बर कोसिस करय। आज कल पढ़इ लिखइ के जमाना आगे हे। कतकोन किताब पढ़बो-फेर-ओ किताब के सीख ल, अपन जीवन मं नई उतारन त का फायदा।

सियान मन गोठ मं कइथे

"पढ़े पर न कढ़े बर
गोठ करे बर चटर चटर।
पढ़े बर पढ़े
फेर कढ़े नहीं।
पढ़े लिखे बने करे।
तोर चाल में कीरा परे।"

समाज मं रइथन त मीत संगी घलो होथे, अउ बैरी दुसमन घलो होथे। सियान मन कइथे दुसमन ल थोरिक सम्मान दे दे, तहां ले ओ हा झुक जथे-

"बैरी ल ऊँच पीढ़ा दय।"

ए सीख ह समाज में, राजनीति में बहुत गरम हावय। घरेलू जिनगी मं सास बहू के रिस्ता बर घलो बहुत गरम हावय। जइसे -

"सास पत्तो तोर, छाती जरै मोर।"

सास बहू तो घर मं बने बने रहिथे, तेला देख के मोर छाती ह जरथे। ए ह नारी सुभाव के बात ए। दूसर के सुख सांति ल देखे नइ सकय। सियान मन कइथे जउन ह सह लेथे, तउन ह सुख मं रइथे।

चार झन के चार बात सुन लिस, रिस झन करिस, अपन काम करत रिहिस इही मं सुख हे।

"सहथे तेकर लहथे।"

हमन सस्ता चीज के पाछू जादा दउड़थन। ओकर बर सीख के बात केहे गे है -

"बाल बियांसी रोपा धान,
तेकर भूंसा पछीने आन।"

माने बालपन में बियासी करे के ये अउ जल्दी धान के रोपां लगावै तब अतेक धान ...हो कि भूसा बटोरे बर दूसर मन आही।

"जब बोवै धान, तब देख के राखै बान।"

जब किसान ह धान बोवे तब, नौकर चाकर के देखभाल करे रहाय -

"जेठ चले पुरवाई, तब सावन धूल उड़ाई।"

जेठ मास में पूरब के हवा जब चलै, तब समझ लेवय कि सावन पान नइ ...य, ...ली धूर्रा उड़ाही।

"राजा के अगाड़ी घोड़ा के पिछाड़ी।"

माने राजा के आगू झन राहय, अउ घोड़ा के पीछू झन राहय -

"तेल फूल से लइका बाढ़य पानी से बाढ़य धान।
खान पान में सगा कुटुम्ब करवैया बढ़य किसान॥"

तेल फूल से लइका बाढ़थे, पानी ले धान बाढ़थे, खाये-खिलाये ले कुटुम्ब बाढ़थे, ...उ मेहत करेले किसान बाढ़थे।

आखिर मं आजकल जउन सुभाव के जोर हे, तउन ल कहि के अपन बात ल खतम ...हूं काबर कि मनखे ह अपने स्वारथ ल पहिली देखथे-

"जबले गुर रथे तब ले चांटा झुमथे।"

अपन काम के बात हे, तब तक संबंध टिके हवय, तहां ले संबंध नइ रहाय।

...त बहिनी मन, नि:स्वारथ संबंध बनावव अउ पुरखा मन के सीख सीख के गोठ ल ...ठ बांधव।

संझा होगे, रांधे पसाय के बेरा होगे।

राम ! राम !

संकलित निबंध के संबंध में :-

"सीख सीख के गोठ" पाठ पर सत्यभामा आड़िल के सर्जक व्यक्तित्व की गहरी ...प है। वैसे भी कहावतें और लोकोक्तियाँ मनुष्य की भाषायी जरूरतों को पूरा करती हैं। इतना ही नहीं, वह आम आदमी की बुद्धि को अपेक्षाकृत अधिक गहरे स्तर तक ...भावित करती है और उसका प्रभाव अधिक स्थायी भी होता है, यह प्रभाव स्थूल ...माजिक सरोकारों तक ही मर्यादित न होकर, भाषायी सौन्दर्यबोध को भी प्रकट करता है। छत्तीसगढ़ के जनजीवन में सरलता है, लोच है, किन्तु एक दीर्घ जीवन्तता भी है। ...ही से छत्तीसगढ़ी कहावतों और लोकोक्तियों में एक लय है, और खेत खलिहानों की ...ोंधी महक भी, जो उनके अर्थों को कभी मिटने नहीं देती, जीवित रखती है। लोकोक्तियों को छत्तीसगढ़ी में "हाना" कहते हैं। अपनी बात को पुष्ट करने के लिए "हाना" का ...योग किया जाता है।

सत्यभामा आड़िल का शब्द संयोजन उनकी रचनात्मक दक्षता को प्रकट करता है। प्रस्तुत पाठ में वे ही लोकोक्तियाँ और कहावतें ली गई हैं, जो रोजमर्रा की जिन्दगी से सरोकार रखती हैं, किन्तु एक साहित्यिक द्वारा प्रस्तुत किये जाने पर उनमें एक नयी दी[illegible] आ गई है। प्रस्तुत निबंध ग्रामीण जागरण की दिशा में नैतिक प्रयास है।

प्रश्नावली

(1) निम्नलिखित अवतरण की व्याख्या कीजिये -

कथें, बिन बुलाए पहुना बनके झन जावय जहां आदर नइ मिलय, मान, गउन न होवय, उंहा झन जाय। पइसा हाथ में आइस तहांले फोकट-फोकट खरचा ऊपर खरचा जइसे चांउर घर में बेहिसाब पकावथे-फेंकथे। अइसना फिजूल खर्ची ल रोके बर, हम सियान मन गोठियाथें -

''तेली घर तेल होथे त पहाड़ ल नइ पोते।''

(2) ''सीख-सीख के गोठ'' पाठ की वस्तु-शिल्प और शैली पर प्रकाश डालि[illegible]

(3) कहावत एवं लोकोक्ति की परिभाषा देते हुए सामाजिक जीवन में उनके महत्[illegible] पर अपने विचार प्रकट कीजिये।

(4) ''सीख-सीख के गोठ'' पाठ से अलग किन्ही पाँच मुहावरों और लोकोक्ति[illegible] का उल्लेख करते हुए दैनिक जीवन में उनका महत्व स्पष्ट कीजिये।

(5) लघुउत्तरीय प्रश्न - टिप्पणी लिखिये।

(1) सत्यभामा आड़िल का कला पक्ष

(2) ''सीख-सीख के गोठ'' पाठ का उद्देश्य

(3) कहावतों एवं लोकोक्तियों का भाषायी सौंदर्य

(6) अति लघूत्तरीय प्रश्न -

(1) निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी अर्थ बताइये -

एमा, अब्बड़, मनखे,

(2) छत्तीसगढ़ी के इन शब्दों को शुद्ध हिन्दी में लिखिये।

जिनगी, खरचा, पइसा,

(3) ''कथे'' क्रियापद का हिन्दी रूप लिखिये।

(4) ''चार झन'' किस प्रकार का विशेषण है ?

(5) छत्तीसगढ़ी में ''एखर'' शब्द का बहुवचन क्या होगा ?

विनय कुमार पाठक

विनय कुमार पाठक छत्तीसगढ़ी साहित्य के समर्पित रचनाकार हैं। उनका व्यक्तित्व जितना सहज है, कृतित्व भी उतना ही सहज, सरल एवं बोधगम्य। आपकी कृतियों को अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

जन्म स्थान : ग्राम जूना, जिला बिलासपुर (छ.ग.)

तिथि : 11 जून 1947

पिता का नाम : श्री सुन्दरलाल पाठक

शिक्षा : हिन्दी में - एम.ए., पी.एच-डी., डी.लिट.
भाषा विज्ञान में - एम.ए., पी.एच-डी., डी.लिट

रचनायें : छत्तीसगढ़ी लोककथा, छत्तीसगढ़ी साहित्य और साहित्यकार, कपिलनाथ कश्यप, कृतित्व-व्यक्तित्व, एक रूख एकेच साखा, (जीवनी), अकादसी अउ अनचिन्हार (काव्य)

इन रचनाओं के अतिरिक्त उनके द्वारा अनेक सम्पादित कृतियों जैसे- गुरू घासीदास स्मारिका, अमरनाथ साव स्मृतिग्रंथ, रउताही वार्षिकी आदि भी महत्वपूर्ण है

विनय पाठक की ''अकादमी अउ अनचिन्हार'' काव्य संग्रह में उनकी ग्यारह प्रतिनिधि कविताएँ संगृहीत हैं। इनमें विनय कुमार पाठक ने छत्तीसगढ़ की मौलिक एवं अभिनव उपमानों और प्रतीकों द्वारा नयी कविता की कथ्य शिल्प और शैली पक्ष को अधिक परिमार्जित करने की कोशिश की है।

तँय उठथस सुरूज उथे

तँय उठथस सूरूज उथे. सुसताथस होथे साम रे।
रात घलो हो जाथे, जब लेथस बने अराम रे॥
जउन पानी ल तँय छूथस, वो गंगाजल हो जाथे रे।
जउन लकड़ी ल तँय धरथस, तुतारी-हल हो जाथे रे॥
जउन बीजा ल तँय छूथस, हो जाथे सुघ्घर पेड़ रे।
जउन रसदा ले रेंगथस बन जाथे वोहर मेड़ रे॥
जब काज म भिड़ जाथस, बेरा हो जाथे थाम रे॥ 1 ॥

भावार्थ - ओ अन्न पिता ! हे विधाता !! तेरे पावन स्वर्श से सामान्य जल भी दिव्योदक बन जाता है। तेरी आचमनी का जल गंगाजल बन जाये, तो यह कोई विस्मय नहीं। जड़ काष्ठ भी तेरे चेतन स्पर्श के कारण कृषि के महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में परिणित हो जाता है। तेरी अंजलिका से बिखेरा हुआ सामान्य बीज स्वर्ण-तरू बनकर

विकसित होता है और अन्न की बालियाँ तुझे झूम-झूमकर प्रणाम करती हैं। तेरे चरणों तले जो धरा आती है, वह विशिष्ट पगडंडी बन जाती है। तेरे चरणों के स्पर्श से धानी धरती की मांग में धवल धूसर चरण-चिह्न बन जाते हैं। तू जब श्रमरत होता है तब दिन भी जैसे ठिठक जाता है, बेला भी थम जाती है।

दू हाथ बढ़ाये आघू, हो जाथे जम्मो काज रे।
बूता सुरू हो जाथे, जब ले लेथस अनताज रे॥
जांगर पेरे तौ भुइयाँ म अनपूरना के राज रे।
माटी सोन्ना होही, पछीना चुचवाही आज रे॥
देंह जुहाड़ी झटकुन, परिही जब जोरहा घाम रे॥ 2॥

भावार्थ -ओ श्रमदेव ! तेरी भुजाओं के बल पर समस्त कार्य पूर्ण होते हैं। तू जब निहारता है तब अपांगदान से ही धरती सुगबुमाने लगती है और तेरे प्रस्वेदित परिश्रम से अन्नपूर्णा को आमंत्रण मिलता है और साधारण मिट्टी से भी सोना बन जाती है। तेरे श्रम से द्रवित प्रस्वेद की बूंदे मिट्टी का भी कायाकल्प कर देती है और दिनमान की ऊष्मा तूझे छूकर शीतल हो जाती है। पसीना सूखता है, बयार विजन डुलाती जो है।

तोर तू-तू-तू-तू बइला के, बन जाथे गीता-छंद रे।
सब खेत होथे राधा, तँय बनथस बेटा नंद रे॥
तोर खुसी ले खेत मन, झुमर-झुमर लहरावैं रे।
तोर उद्दाह ले गाँवें, म नवा जिनगी आवै रे॥
तोर खेत के चारों खुट, हो जाथे चारों धाम रे॥ 3॥

भावार्थ -ओ अधिदेवता ! तेरी वाणी से निःसृत वृष-युगल के लिए संकेत स्वर पावन गीता के प्रेरक छंद के रूप में परिणित हो जाता है। खेत बदल जाते हैं, वातावरण बदल जाता है। साँवले-सलोने नंदकिशोर के रूप में यह धरा आराधिका राधा बन जाती है और तेरी प्रणयाराधिका तेरी प्रसन्नता से पुलकित होकर झूम-झूमकर लहराती है। तेरे उत्साह से ग्राम में नया जीवन आता है और तेरी श्रम-साधना के कारण तेरे खेत के चारों कोने चारों पावन धाम के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। सचमुच तू विधाता है, अन्नदाता है।

किसान धरती का सर्वस्व होता है, वह पृथापुत्र है, अन्नदाता है, श्रम का देवता है। प्राण समग्र को उसी के श्रम से जीवन मिलता है। सूर्य की स्वर्णिम किरणें उसका गौरव गान करती हैं। किसान का जागना ही सृष्टि का सुबह होना।

एक किसिम के नियाव

चैतू
पहटिया इहाँ
सबो दूध ल
अमरा देथे
घर भर के सबो
दाना - दाना बर तरसथें
अउ उपास म घर के
दूध घलो नइं पा सकै।
बैसाखू
सेठ इहाँ जाके
जांगर पेर के
महल-अटारी बनाथे
घर भर के सबो
छाँव भर कलपथें
फेर माटी के बेटा
माटी के घर-कुरिया नइं बना सकै।
जेठू
महाजन इहाँ
सूत के ओढ़ना बनाके
दे आथे
घर भर के सबो
चेंदरी बर तुलुवाथें
इज्जत ढाँके बर
जुन्ना कपड़ा घलाव नइं पा सकै।
पुसऊ
गाँव म
बिसनु भगवान के मंदिर
बनाथे
घर भर के सबो
भगवान के दरसन
अउ परसाद बर तरसथें
अउ तो अउ वो हर
मंदिर के डेहरी नइं चघ सकै।
चैतू भूख म
बैसाखू घाम म
जेठू इज्जत म
अउ पूसऊ जाड़ म
जांगर चलात-चलात
अकड़ के मर जाथे।
बिधाता के एहू
एक किसिम के नियाव आय
अपन भगत सो बलि लेके
या उनला संसार के दुख
ले उबारे के।

भावार्थ :- अज मानव धर्म, जाति, वर्ण और जाने किन-किन आधारों पर खंडित है कि मानवता का स्वरूप दृष्टिगत नहीं होता। विडंबना है कि चैतू ग्वाला सामंत के घर पूरा दूध दे आता है जबकि उसका परिवार दाने-दाने को मोहताज है। उपवास की इस हालत में उसके घर का दूध भी उसके भाग्य में नहीं है। मजदूर, सेठ की महल-अटारी तो बना लेता है लेकिन उसका परिवार छाया के लिये तरसता है। विपरीतता यह है कि माटी-पुत्र होकर भी मिट्टी का कुटीर निर्मित नहीं कर पाता ? वस्त्रकार, महाजन को वस्त्र बनाकर देता है लेकिन उसका परिवार फटे-चिथड़ों में जीता है तथा वह स्वत: पुराने परिधान की चाह में दम तोड़ देता है। भगवान के लिये मंदिर-निर्माण करने वाला लोकवास्तुकार इतना उपेक्षित हो जाता है कि उसका परिवार ईश-दर्शन करने व प्रसाद

पाने की संकल्पना भी नहीं कर सकता। विरोधाभास यह है कि मंदिर बनने के बाद अस्पृश्य समझकर वह सीढ़ी तक पहुँचकर ही संतोष का अनुभव करता है।

कवि इन विद्रूपताओं और विषमताओं को ही रेखांकित नहीं करते वरन् यथार्थ के मर्म तक पहुँचने के लिए सत्य का आश्रय-ग्रहण करते हैं। वे आगे लिखते हैं कि यदि भूख, इज्जत और प्रकृति-प्रकोप के कारण कमेरे, श्रमिकों, मजदूरों व लोक व कलाकारों की असामयिक मृत्यु हो जाती है तो यह ईश्वर का उनके दुखों के त्राण की लीला अथवा उनकी साधना और त्याग की बलि-वेदी पर चढ़ जाने का संयोजन कहा जा सकता है। कवि यहाँ भाग्यवादी व परंपरावादी समाज पर कटाक्ष ही नहीं करते; प्रत्युत उस समाज के सत्ताधीशों पर भी प्रहार करते हैं जो श्रमिकों के बल पर ऐश्वर्यमय जीवन जीते हैं लेकिन उनकी मूलभूत सुविधा जुटाने के योग्य उन्हें बनने ही नहीं देते।

प्रश्नावली

(1) विनय पाठक की कविता ''तँय उठथस सुरूज उथे'' का कथ्य लिखिए?

(2) छत्तीसगढ़ी काव्य में विनय पाठक का योगदान बताइए ?

(3) इन पंक्तियों का भावार्थ लिखिए -

अ. जउन पानी ल तँय छूथस, वो गंगाजल हो जाथे रे।
जउन लकड़ी ल तँय धरथस, तुतारी-हल हो जाथे रे॥

ब. जेठू
महाजन इहाँ
सूत के ओढ़ना बनाके
दे आथे
घर भर के सबो
चेंदरी बर लुलुवाथें
इज्जत ढाँके बर
जुन्ना कपड़ा घलाव नइं पा सकै।

(4) लघु उत्तरीय प्रश्न-टिप्पणी लिखिए-

अ. विनय कुमार पाठक का रचना संसार

ब. ''एक किसिम के नियाव'' कविता का शिल्पपक्ष

(5) अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. ''एक रूख एकेच साखा''-काव्य है या जीवनी ?
2. ''अकादसी अउ अनचिन्हार''-में कितनी कविताएँ संकलित हैं?
3. ''तुतारी-हल'' का किस कार्य में प्रयोग करते हैं?
4. ''झटकुन'' का हिन्दी रूप लिखिए?
5. ''जुन्ना'' शब्द का अर्थ लिखिए?

मुकुन्द कौशल

वर्तमान साहित्य जगत् में मुकुन्द कौशल एक सुपरिचित नाम है। 7 नवम्बर 1947 को दुर्ग में जन्में मुकुंद कौशल को, संगीत व साहित्य के संस्कार विरासत में मिले हैं। कौशल, वस्तुतः मुकुन्दजी का उपनाम है। वे गुजराती भाषी हैं। हिन्दी तथा छत्तीसगढ़ी के अतिरिक्त वे गुजराती व उर्दू में भी शायरी करते हैं। छत्तीसगढ़ी में उनका भाषायी चमत्कार देखते ही बनता है।

छत्तीसगढ़ी में ''भिनसार'' (1969) तथा ''छत्तीसगढ़ी गजल'' (2002) नामक उनके दो काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त 1993 में हिन्दी काव्य संग्रह ''लालटेन जलने दो'', तथा 2002 में शब्द क्रांति शीर्षक प्रेरणागीतों का संग्रह प्रकाशित हुआ है।

आपकी रचनाओं की प्रमुख विशेषता-लयात्मकता व छन्दबद्धता है। आप आरंभ से ही एक प्रयोगवादी गीतकार रहे। आपकी भाषा, सहज, सरल व सुगम है। आंचलिक प्रतीकों, उपमाओं व मुहावरों का सटीक प्रयोग आपके काव्य शिल्प को और भी आकर्षक व सम्प्रेषणीय बनाता है। उनकी छत्तीसगढ़ी गजलों के शेर कवि बिहारी के सतसई दोहरों की याद दिलाते हैं। उनका रचना संसार इन्द्रधनुषी रंगों से रचा-बसा है।

संकलित गजल के संदर्भ में :-

आंचलिक स्पर्श के साथ अपनी अर्थवत्ता को उजागर करती हुई, प्रस्तुत गजल, उनकी बहुचर्चित कृति छत्तीसगढ़ी गजल से उद्दृत की गयी है।

गजल एक पद्य प्रकार है। यह अरबी मूल का है। अरबी से फारसी और फारसी से उर्दू में आया। उर्दू से इसे हिन्दी में लाने का श्रेय दुष्यन्त कुमार को है। और अब हिन्दी से इसे छत्तीसगढ़ी में लाने का श्रेय मुकुन्द कौशल को जाता है। मुकुन्द कौशल की गजलें उर्दू गजलों जैसी इश्क-फरमान के लिए नहीं है वरन् उसकी विषय वस्तु दुष्यन्त कुमार की गजलों के तेवर ली हुई हैं। कहीं व्यंग कहीं प्रतीक, कहीं प्रत्यक्ष एवं कहीं प्रकारान्तर से सामाजिक हालात को मुकुन्द कौशल ने कोसा है और जनता को सावधान किया है कि वे उस पंक्ति क्षेत्र से दूर रहें जहाँ आदमी को आदमी तिजारत की नजर से देखता है।

छत्तीसगढ़ी गजल

छै बित्ता के मनखे देखौ, कां का जिनिस बिसा लेथे।
आगी पानी पवन अकासा, भुंइया तको नंगा लेथे॥ 1॥

भावार्थ :- यह मनुष्य केवल छः बालिश्त का है परंतु न जाने कितनी वस्तुएँ अपनी

शक्ति सामर्थ्य से खरीद लेता है। अग्नि, जल, पवन, आकाश जहाँ तक धरती है - सबको छीन कर अपने वश में कर लेता है।

(यहाँ मनुष्य की शक्ति, बुद्धि, मेधा, व ऊर्जा की ओर इंगित किया गया है।)

चारों डहर सवाल उगे हे, मूड़ उचाए करगा कस।
यैला लू के सफल किसन्हा, हर जुवाब सिरजा लेथे ॥ 2 ॥

भावार्थ :- चारों ओर प्रश्न उठे हैं, जैसे "करगा" (व्यर्थ घास) खेतों में ऊग जाता है। जिस तरह किसान "करगा" को "लू" (उखाड़) लेता है और अपनी फसल की बढ़ोत्तरी के लिए रास्ता साफ कर लेता है, उसी तरह मनुष्य भी सारे प्रश्नों के उत्तर (हल) तैयार कर लेता है।

(यहाँ मनुष्य की बुद्धि, विवेक की ओर इंगित किया गया है)

पीरा, अपने आप टघल जाथे बेरा के ढरकत ले।
ऊँखरे हवय जमाना संगी, जै पीरा संग गा लेथे ॥ 3 ॥

भावार्थ :- जिस तरह समय बीत जाता है (सुबह से शाम हो जाती है) उसी तरह मनुष्य के हृदय की पीड़ा, दुख, दर्द सब पिघल जाता है। अर्थात् दु:ख समय बीतने के साथ-साथ कम होता जाता है। जो पीड़ा और दुख के साथ गीत गा लेते हैं - उन्हीं का जमाना है।

(पीड़ा को गीतों के माध्यम से व्यक्त करके, कवि, जीवन जीने की बात कर रहे हैं)

हिजगा-पारी के बजार मां, परमारथ के मोल कहां।
हांस के गुरतुर भाखा बोलय, उही परमपद पा लेथे ॥ 4 ॥

भावार्थ :- प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या, द्वेष के बाजार में, परोपकार का क्या मूल्य ? जो मनुष्य ऐसे संसार में हँस हँस कर मीठी वाणी बोल लेता है, वही मानों परमपद प्राप्त कर लेता है।

(संसार और जीवन में प्रेमयुक्त वाणी का महत्व बतलाया गया है)

समय पड़े हे सम्हरे बर अऊ, चिक्कन कोरे गाथे बर।
चतुरा मन हर ठंऊका बेरा, चूंदी ला पटिया लेथे ॥ 5 ॥

भावार्थ :- सजने संवरने और अच्छे वस्त्र पहनकर तैयार होने के लिए समय बहुत है, और चेहरे को चिकना संवारने, बालू संवारने व चोटी गूँथने के लिए भी बहुत समय शेष है, परंतु चतुर नारी उचित समय पर, बालों को शीघ्र संवार लेती है।

(नारी मन की चुतरता और समय की पहचान की ओर इंगित किया गया है)

दिन दुकाल ला हाँस के सहिथे, छत्तीसगढ़ के भुंइया हर।
महतारी मन गरा-धूंका, अंचरा मां गठिया लेथे ॥ 6 ॥

भावार्थ :- छत्तीसगढ़ की धरती अकाल, अभाव को हँस कर सह लेती है। धरती मां है जो सभी बिमारियों और अभावों को अपने आँचल में बाँधकर रख लेती है।

(छत्तीसगढ़ी की मिट्टी में, मनुष्यों में जो सहनशीलता है - उसका वर्णन किया गया है।)

जम्मो साथ चुरौना बोरेंव, एक साथ के खातिर मैं।
एक दिसा के उड़त परेवा, ठींया ला अमरा लेथे ॥ 7 ॥

भावार्थ :- एक साध (ईच्छा) की पूर्ति के लिए, सभी ईच्छाओं को भट्टी में डाल दिया मैने। ("चूरौना" अर्थात् धोने के लिए ढेर सारे कपड़ों को गरम पानी सोडा में उबाला जाता है - भट्टी पर चढ़ाया जाता है)। एक दिशा से उड़ता हुआ पक्षी अपनी ठीया अर्थात् गन्तव्य स्थान को प्राप्त कर लेता है।

(एक ईच्छा की साधान से, सभी साधनाएँ पूर्ण हो जाती हैं)

उन्खर तिर ओधे के पहिली, सुन ले कौसंल गोठ हमर।
बड़े बड़े मछरीमन छोटे, मछरी मन ला खा लेथे ॥ 8 ॥

भावार्थ :- कवि कौशल चेतावनी दे रहे हैं कि उन बड़े-बड़े लोगों का सहारा लेने से पूर्व मेरी बात सुनो क्योंकि बड़ी मछलियाँ, छोटी मछलियों को खा लेती हैं।

(धनवान और सत्ता संपन्न लोगों से दूर रहने के लिए अगाह कर रहे हैं कवि)

प्रश्नावली

(1) समकालीन छत्तीसगढ़ी कविता और मुकुन्द कौशल की गजलों में भावसाम्यता स्पष्ट कीजिये।
(2) समकालीन काव्य के विकास में मुकुन्द कौशल का स्थान निर्दिष्ट कीजिये।
(3) इन शेरों का भावार्थ लिखिये।
"जम्मो साथ चुरौना बोरेंव, एक साध के खातिर में
एक दिशा के उड़त परेवा, ठींया ला अमरा लेथे ॥"
उन्खर तिर ओधे के पहिली, सुनले कौसल गोठ हमर,
बड़े बड़े मछरी मन छोटे, मछरी मन ला खा लेथे ॥

छत्तीसगढ़ी में -

''छत्तीसगढ़ी-दानलीला'' रचना काल 1905 खंड काव्य प्रकाशित। ''छत्तीसगढ़ी-रामायण'', अप्रकाशित रचनाकाल सन् 1907। ''कंस वध खंड काव्य'' अप्रकाशित, रचनाकाल सन 1907। ''ब्राह्मण गीतावली प्रकाशित''। ''सतनामी पुराण'' प्रकाशित

अपने नाटकों और काव्यों में इतिहास और पौराणिक कथाओं की व्याख्या उन्होंने पात्रों के मानवीय हावभाव के साथ किया है। उनके साहित्य में ध्रुव, कृष्ण, विक्रम आदि पात्र अपनी तमाम खुशिओं और मानवीय कमजोरियों के साथ चित्रित है।

यदि केवल साहित्य सर्जना में उन्होने अपनी संपूर्ण प्रतिभा का उपयोग किया होता, तो इसमें दो मत नही कि वे छत्तीसगढ़ के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कहलाते।

साहित्य के कुछ उद्धरण

छत्तीसगढ़ी गाँधी के नाम से विख्यात, महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. सुन्दरलाल एक युग प्रवर्तक थे। देशभक्त, समाजसुधारक तो थे ही उत्कृष्ट कवि तथा साहित्यका भी थे।

जैसे निम्न पंक्तियों में उन्होने अपने व्यक्तिगत मनोभाव तथा आकांक्षा को प्रस्तु किया है -

कबहूं सतसंग में रंग रहैं, कबहूं उर आनंद ते विहरें।
कबहूं कवि सुन्दर काव्य करैं, कबहूं उपदेशन को उबरैं॥
कबहूं पर के उपकारन में, निवछावर ये तन प्राण करै॥
हमरे यह जीवन या विधितें, कबधौं करूणाकर पार करें॥

छत्तीसगढ़ के लाखों उपेक्षित हरिजनों की गरीबी और दारिद्रय से पं. शर्मा का कवि हृदय करूणा से भर चुका था। कवि ने अपने ''पतित प्रार्थना'' नामक कविता में लिख है -

भैयों। पतितों का उद्धार सदा करते रहो जी।
बिछड़े, पतन हुए लोगों को ऊपर लेहु उठाय॥
प्रेम समेत इन्हें अपनाकर छाती लेहु लगाय।
ये भी धर्म सनातन ही के हैं भैय्या एक अंग
इनको फेंक मूढ़ता के वश मत हो जाना पंगु॥

उन्होंने अपनी इस वाणी को मूर्तरूप देने हरिजनों को छाती से लगा लिया। तब इन्हें कट्टरपंथी हिन्दूओं ने बहिष्कृत कर दिया जिसकी उन्होंने परवाह नहीं की और लिख है -

भले बदनाम करैं बदलोग, अरे बरबाद चहै होय जावो
देश के हेव से देश निकाल दै, हर्ज नहीं कछु, हांसत जावो।

पं. सुन्दरलाल शर्मा ने सन् 1906 में छत्तीसगढ़ी दानलीला का सार्वजनिक प्रकाशन कर छत्तीसगढ़ी को भाषा का रूप देने का सर्वप्रथम प्रयास किया जिसके कारण इन्हें छत्तीसगढ़ी का आदि कवि कहा जाता है। यह कृष्ण भक्ति रचना है।

दानलीला के प्रकाशित पुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर लिखा था कि यह किताब छत्तीसगढ़ प्रांत के सभी किताब दुकानों में उपलब्ध है। अर्थात् उनकी प्रारंभ से ही यह सोच थी कि छत्तीसगढ़वासियों का अपना एक छोटा सा प्रांत हो।

इन्होंने ग्रामीण परिवेश, संस्कृति आदि को लेकर प्रसिद्ध छत्तीसगढ़ी रामायण की रचना की है। जिसके कारण इन्हें देश के महान कवि की उपाधि मिली थी। छत्तीसगढ़ी रामायण अप्रकाशित है, इसकी कुछ पंक्ति इस प्रकार प्रस्तुत है -

दोहा -

रामायण का प्रारंभ मंगलाचरण से होता है -
जनम देवैया जगत के, जगपति लाकर जोर,
बेर-बेर विनती करो, होव सहायक मोर
रामचन्द्र भगवान के कहिहौं कथा बनाय
समुझि सुनिहौ चित्तजगाय॥

मंगलाचरण के पश्चात् पंच गोठ-

घर के भीतर एक दिन बइठे दसरथराय
न्हाय न्हाय वीर पूजा करत, रहिन हृदय हरषाय

राजा दशरथ के घर पुत्र जन्म नहीं होने से वह चिंतित है उसे कवि ने लिखा है -

मन-मन गुनत करत दुख राजा, कब बजिहैं घर सोहर बाजा
कबधौं अइसन सात आहै, कब अतका अस साध बुता है॥

राजा दशरथ ने गुरु वशिष्ठ के पैर में गिरकर अपनी व्यथा सुनाई। मुनी ने कहा राजन जो तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी -

उमंगत भूप हाथ में झोंकिन, गदगद भइन नयन जल रोकिन
फिर उठके मुनि मनके पगलागिन, कौशल्यादि सबो बड़भागिन
मुनि महराज धन्य करि दाया, आज करेब परिपूरण माया
जब ले जग में जिनगी धरबो, ये उपकार न जियत बिसरबो॥

गुरु कृपा से राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न का जन्म होता है। बालकाण्ड से पं. सुंदरलाल शर्मा की वर्णन शैली ग्रामीण संस्कृति से अभिप्रेरित है - बाल्यावस्था का वर्णन है -

असने बालचरित अनुसरहीं, गम्मत गढ़न-गढ़न के करही
नाचत कूदत दउरत फुदकत, गिर-गिर उठत हंसत कभू उनगत्
ढलगत रोवत सुसकत, जावैं आवैं तब सब दउर मनावैं
धनसो जीव राम झरियाइन झराइन पोंछिन उठ्ठाईन

इसके उपरान्त गुरुकुल का चित्रण है -

कुकरा के बासत उठिन सनतेच लक्ष्मण लाल
गरूजे आगूं जगतपति जागिन राम कृपाल
कुल्ला करिन नयन मुंह धोइन, टहलिन दिशा गइन श्रम खोइन
चिक्कन हाथ पांव मटियाइन, दतवन कोइला धसिन नहाइन ॥

इस तरह से पं. सुन्दरलाल शर्मा, अद्वितीय, बहुआयामी विलक्षण प्रतिभा के धनी, देशभक्त, समाज सुधारक, शिल्पकार, चित्रकार, नाटककार थे।

(छत्तीसगढ़ी दानलीला के प्रारंभ का अंश उद्धृत है)

छत्तीसगढ़ी - दानलीला

॥ जै राजीवलोचन बबा ॥

(सब ले आगू देवता संउरे के मड़वना)

जगदिश्वर के पाँव में, आपन मूड़ नवाय।
सिरी कृष्ण भगवान के, कहि हो चरित सुनाय ॥
मन में मन तो मिल गइस, आँखी रहिस समाय।
मया फन्द में राधिका, मछरी अस तड़फाय ॥
जा दिन ते नन्दलाल ला, ठाढ़े देखेंव खोर।
कांही नहीं सुहावै, गोई ! किरिया तोर ॥

सुन आज मुहाटी में ठाढ़े रहेंव, बेटवा जसुदा तहँ आइस ओ।
हँस के मोला देख भऊं टेंड़गा, करके मुंह ला बिचकाइस ओ।
तब दौंर पोटार निकार के लाज, धरेंव मुड़ा छोंड़ पराइस ओ।
खरिखा के तनी वो धनी लरिका, ठेंगवा मीला आज बताइस ओ।

खरिखा में लरिका लिये, देखेंव नन्द किशोर।
चरखा सरिख तभिच ले, गिंजरत है मन मोर ॥
कोनो जतन लगाय के, देते श्याम मिलाय।
धोकर धोकर के रात दिन, परतेंव तोरेच पाँय ॥

जब ले सपना मैं निहारेंव ओ। तब ले मिलकी नइ मारेंव ओ ॥
दिन राम मोला हयरान करैं। दुखदाई ये दाई ! जवानी जरैं ॥
मैं गोई ! अब कोन उपाय करौं ? के कहूँ दहरा बिच बूड़ मरौं ॥
मोला कोनों उपाय नइ सुझत है। ये गोई गोदना अस गूदत है ॥
जब ले वोला मूड़ में मौंर धरे। गर में बने फूल के माला करे ॥
लवड़ी दुहनी कर में लटुका। पहिरे पिंयरा पिंयरा पटुका ॥
मैं तो जात चले देख पारेंव ओ। वोला कुंज के कोती निहारेंव ओ ॥
तब ले गाई ! मैं बनि येगेंव बही। थोरको सुरता मोला चेत नहीं ॥
चिटको नइ अन्न सुहावै मोला। बिरदान्त मैं कोन बतावौं तोला ॥
बढ़ के तोला गोई ! बतावौं नहीं। थोरको तोर मेर लुकावौं नहीं ॥
हस जानत मोर सुभाव गोई। कतको दुखहाई बतावै कोई ॥
मिलि के कभू गोकूल जातेन ओ। मन के मरजी ला बतातेन ओ ॥
दुख औ सुख ला गोठियातेन ओ। घर साँझक ले फिर आतेन ओ ॥
धर लेतेन थोरिक दूध दही। गोठियाथौं गोई ! मन आथे नहीं ?
बेंच देतेन खीर बेचातिस तो। कन्हैया ला खवातेन खातिस तो ॥
लेवना बने लाल ला देतेन वो। लाहो ल जिनगी के ले लेतेन वो ॥
करेजा में खड़ोर के नातेन वो। मुंह देखत में सुख पातेन वो ॥
नन्द गौटिया के बेटवा हर ओ। मोर आइस आँखिन के तर ओ ॥
तब ले चिटको नइ भूलत है। मोर आंखिच आंखी में झूलत है ॥
जब कान टँड़ेर लगाथौं ओ। घूंघरू के कभू गम पाथव ओ ॥
जब झक्क ले आगू निहारथौं ओ। दही चोर ला मैं देख पारथौं ओ।
मन ही मन में लगथै डर ओ। हरि देइस मोला कछु कर ओ।
मन मोर चोराय सु लेइस है, मोहनी कछु थोप धौ देइस है ॥
कोन जानथे जो कछु जाहै होई ? ये जवानी ला कइसे निभाहौं गोई ॥

देखे बिन नन्दलाल के, अब तो नइ रहि जाय।
जात समा डर छाँड़ के, धरिहौं मोहन पांय ॥
चलो आज चलबो गोई, बृन्दावन के बाट।

ऐसनं दूसर जघा बताहै। ठट्ठा भला कौन पतियाहै ॥
ले तो भला बता दे कोई। हरि ला ऐसन चाहिय गोई ॥
ऐसे सुनत श्याम मुसकाये। भऊ नचावत आगू आये ॥
सेर बांध चतुरो खोजबायेंव। नहीं तुम्हार बरोबर पायेंव ॥
चलिहै नहि मोर मेर चलाकी। अभी सउँरिहौ दाई काकी ॥
मानो सोक्ष जगात मड़ा दौ। लेखा करके सबो चुका दौ।

एकक सबो हिसाब के, कर देव मोर चुकाव।
मंझन होत जात है, सोझ हंसत घर जाव ॥

नहिं तो फट फट में पर जाहौ। फोकट इज्जत अपन गंवाहौ ॥
देखत अभी नगा मैं लंहौं। औ फेर सबो हाल कर देहौं ॥
आखिर फेर हाथ का आहै। बात तुम्हार कोन रहि जाहै ॥
रोज बिहनियां मथुरा जाथौ। रात भये ले गोकुल आथौं ॥
भल मानुख के बेटी हौके। काम करत हौ चोरपने के ॥
रौताइन सब सुनत रिसाइन। कब ले श्याम साव बन आइन ॥
चोरी करत उमर सब मेले। भयेव बड़े मोहन छोटे ले ॥
तउन आज ऐसन बोलत हौ। चोट्टी कहि हम ला ठोलत हौ ॥
चोर तुम्हारे ऐल्हे पेल्हे। अउ तुम चोर चोर के चेले ॥
काल चोराय जो माखन खाये। आजेच मोहन गयेव भुलाये।
मूसर में जब बांधिस लाके। तब हम सबो छोड़ायेन जाके ॥
काले रोयेव अभी भुलायेव। आजेच भोंगचंद बन आयेव ॥

कंसराय के राज में, करौं न ऐसन काम।
घूसड़ अभी जाहै सबो, बनेव जगाती श्याम ॥

चाहे भलुक मांग के खावौ। आवौ ! बइठौ ! दौना लावौ ॥
नाम जगात बूंद नइ पाहौं। आखिर चुचवावत रहि जाहौं ॥
ऐसे सुनत श्याम मुसकाइन। थोरिक आंखी मार बताइन ॥
चिटिक मुलाजा नइ छू जाथै। मुह में कथौ जैसने आथै ॥
हँड़िया के मुंह में परई दे। मनखे के मुंह में का सा दै ॥
मात गये हौ सब मोटियारी। नहि खियाल मस्ती में भारी ॥

आँय बाय मनमुखी वकत हौं। भूत धरे अस बात करत हौं ॥
फोकट कौन जीभ पिरवावै। माछी मारै हाथ बसावै ॥
जो मुंह आहै तउन बताहौं। दान दिये बिन जान न पाहौं ॥
आव सबै डूमर कस किरवा। का जानौं तुम दूसर बिरवा ॥
एक कस ला तुम सुन पायेव। आपन भर औंखाद बतायेव ॥
टेटका के पहुँचान कहाँ ले ? भांड़ी बारी तीर जहाँ ले ॥

पिरथी सरग पताल औ, चन्दा सुरुज लगाय।
तीन लोक चौंदा भुवन, राज हमारेच आय ॥

इहां कंस ला कउन डेरावै। ऐसन कंस हजारों आवैं ॥
चूंदी धरके अभी पछारौं। चोंगी पीयत भरे में मारौं ॥
तेखर डर मोला डरुवाथौं। मोला लइका जान बताथौं ॥
कीर खींच के कहौं चेता के। मोला किरिया नंद बबा के ॥
चाहे मूड़ पटक मर जावो। कतको चाहौं हड्ड बड़ावौ ॥
जबले नहीं जगात मड़ाहौं। कैसनो करौं जान नइ पाहौ ॥
ऐसन सुनत सबो रौताइन। मुंह बिचकाइन और रिसाइन ॥
बिच झाड़ी में सुन्ना पाके। डेरुवावत हौ हमला आके ॥
लोखन केर उधैया आये। छेंकत बेटी पतो पराये ॥
अभी जाय घर अपन बताथन। लिगरी दू के चार लगाथन ॥
तौ फेंर श्याम हाल का हो है। हाँसी खेल बाव ये नोहै ॥
जाथों वन्धवा मेर बताथौं। भुंसड़ा तोर अभी खेदवाथौं ॥

टूरी टूरी जान के, मोहन करत अबेर।
धुंचौ चलौ अब जान दौ, ढरकन लागिस बेर ॥

लहत बिहत के रहब भला अय। बहूतों के तपबो हर का अय ॥
गाँव गाँव में रथैं गौंटिया। कोनो ऐसन करथैं घीया ॥
जात पाँत में सबो बराबर। नै अय गोई घाट कोनो हर ॥
दू कोरी गेरुवा के मारे। आंखी भइस बेलन्द तुम्हारे ॥
छो छो करके गाय चरावै। राजा कहत लाज नइ आवै ॥
कमरा औ खुमरी ओढ़े बर। बड़े बड़े सांहुत जौरे बर ॥

ढोंग बघारे बर हो जेला। कहै जौन नइ जानै तेला ॥
तुमला कौन बतावैं लाला। जानत हवन तीन पुरखा ला ॥
तुम तो आव नन्द के बेटा। जनमे हवौ जसोदा पेटा ॥
गड़े हवैं गोकुल में नेरवा। घर में है दू कोरी गेरुवा ॥
चोरी कर कर लेवना खायेव। कहूँ बधायेथ कहूँ पिटायेव ॥
नइ चोरी में पेट भरिंस जब। श्याम पेंडारा परे लगेव तब ॥
जब तुम दिन भर गाय चराथौ। तब घर में खाये बर पाथौं ॥
सुरता तउन भुला गय मुहना। कहाँ गँवायेव नोई दुहना ॥
पँडरा नन्द जसोदा पँडरी। तुम कैसे हो करलुठुवा हरि ॥

परिस दुकाल गुपाल जब, हमर राज में आय।
दुइ काठ कोदों बदल, तुमला लइन बिसाय ॥

जो राजा भला बताथौं। हाथी कहौ कहाँ ले पाथौं ॥
छाता मौर कहां तुम डारे। नौकर चाकर कहां तुम्हारे ॥
गादी बइठौं चंचल डुलावौ। तौ फेर का गुन गाय चरावौ ॥
देखे गोई आखिर अहिरे। राजा होके भदई पहिरे ॥
हीरा मोती लाल कहां गय। गोंगची पहिरे लाज नहिं लागय ॥
पीक मजूर लगाये पागा। लाज चिटिक नइ लागै कागा ॥
फेंकी खुमरी ढंट्टा बाँधी। कमरा चीर अंगरखा साधौ ॥
कहिबे संझहा नन्द गौटिया, देहै एक झिन लगा पहटिया ॥
फबित नहीं आवै थोरको के। ठेंगा पकरे राजा होके ॥
बिन मनखे तनखे बिन बाजा। नेवाई के देखेन राजा ॥
ऐसन सुनत श्याम मुसुकाइन। निधड़क निचट अगाड़ी आइन ॥
सूबा मान प्रोंष चारिक ठन। रौताइन राखैं घर दूझन ॥

कोयली अस बासत हवौ, कहौ न बात विचार।
मुहु लग्गी हो गये हव, गोकुल के दूचार ॥

तभे सभे मिलकी मारत हौ। तुम मोला निंदरे डारत हौ।
सुनत ओ पूछत हौं तोला। कब जन्मत देखे हस मोला ॥
कहाँ ले नन्द जसोदा आइन। जनथौं इन्हला कौन बनाइन ॥

महीं सिरजथौं महीं चराथौं। महीं जियाथां मही मारथौं ॥
मोर बिना पाता नइ हालै। आखिर तुम ला कहों कहाँ ले ॥
पाप अघात भुंया गरुवाइस। मोर मेर रोवत तब आइस ॥
तब मैं मन में मया मड़ायेंव। मनखे के चोला धर आयेंव ॥
जेमा मनुबा चारि करि हैं। लीला गाहै सुनिहै तरिहै ॥
तेला अड़हा मन का जानौ। टेंड़गा-सोझहा अपने तानौं ॥
कमरा के तुम निंदा करथौं। वही कमरहा पाले परथौ ॥
का जानौ कमरा के गुना ला। दही ओ ओ कपसा एके तुमला ॥
तीन लोक में खोजवांयेव। कमरा के न बरोबर पायेंव ॥
ग्वालिन सुनत कहन अस लागिन। कोन गोंठ ला कहां निकालिन ॥

प्रश्नावली

(1) टिप्पणी लिखिए-

1. पं. सुंदरलाल शर्मा का साहित्यिक परिचय दीजिए ?
2. "छत्तीसगढ़ी दानलीला". का कथानक
3. पं. सुंदरलाल शर्मा का रचना संसार

(2) अति लधु उत्तरीय प्रश्न -

1. पं. सुंदरलाल से सन् 1904 में किस नाटक की रचना की ?
2. सन् 1915 में पं. सुंदरलाल शर्मा की किस पुस्तक का प्रकाशन हुआ ?
3. पं. सुदरलाल शर्मा की कुल कृतियों की संख्या कितनी है ?
4. "निवछावर" शब्द का हिन्दी रूप लिखिए ?
5. "कुंकरा" शब्द का हिन्दी रूप लिखिए ?



(2) रामचन्द्र देशमुख

जन्म स्थान - ग्राम पिनकापार (राजनांदगाँव)। तिथि - 25 अक्टूबर, सन् 1916, पिता - श्री गोविन्द प्रसाद देशमुख। शिक्षा - बी.एस-सी., एल.एल बी.। व्यवसाय - कृषि, आयुर्वेद चिकित्सा। छत्तीसगढ़ी लोकमंच के अनवरत साधक, प्रख्यात निर्देशक, संस्थापक, संचालक। निवास-बघेरा, पोस्ट मोहननगर, दुर्ग। सम्प्रति - दिवंगत।

कल्पनाशील रामचन्द्र देशमुख ने छत्तीसगढ़ में लोकमंच का इतिहास बनाया। सन् 1950 में रामचन्द्र देशमुख ने ''छत्तीसगढ़ देहाती कला विकास मंडल'' की स्थापना की थी। इसके लिए सागर की तलहटी से निकाले गए मोतियों की तरह, उन्होंने न जाने कहाँ-कहाँ से लोक-कलाकारों को एक मंच पर, एक साथ इकठ्ठा किया था। अपनी संस्था में नगीनों की तरह इन्हें जड़ा था, मंचों पर सजाया था। रायगढ़ के लाल फूलचन्द श्रीवास्तव, बिलासपुर के लक्ष्मणदास पैनका, रिंगनी साज के ठाकुर राम, भुलवा, रवेली साज के मदन लाल, जगन्नाथ, बुधराम, दौनरसाज के तीजू, जिवराखन, कुलेश्वर, रघुवीर, पलारी के इतवारी, मुकुन्द, अलेन, कोनारी राज के बुद्ध अछोली के चोवाराम जैसे छत्तीसगढ़ के अनगिनत कलाकरों की लंबी श्रृँखला हैं, आज इनमें से अधिकांश पता नहीं कहाँ हैं, कैसे हैं, हैं भी या नहीं.... लेकिन वे सारे के सारे कुछ करने के उत्साह में एक साथ जुट गए थे, ये ही कलाकार ''छत्तीसगढ़ देहाती कला विकास मंडल'' के जगमगाते नक्षत्र थे। लोकमंच को परिमार्जित और परिष्कृत करने की दिशा में ''छत्तीसगढ़ देहाती विकास मंडल'' रामचन्द्र देशमुख का पहला मंचीय प्रयोग था।

रामचन्द्र देशमुख ने कला को समाज सुधार व सामाजिक जागरण से जोड़ा। यह साधना लोकसाधना थी। ''छत्तीसगढ़ देहाती विकास मंडल'' के प्रथम मंचीय प्रयोग के बाद कुछ समय तक उनके जीवन में रिक्तता रही। एक अलग तरह का सन्नाटा और हाहाकार। गंभीर चिन्तन का अनवरत सिलसिला। कल्पना के गर्भ में महान सर्जना का शिशु कुलबुलाने लगा। यह काल ''चंदैनी गौंदा'' जैसे महान सृष्टि की पूर्व प्रसव वेदना का काल था। इसी बीच एक घटना घट गई। साधारण सी पर हिला देने वाली घटना।

रात को, रामचन्द्र देशमुख के घर के सामने की गली के नीम धुंधलके में एक छोटी सी लड़की सिसक कर रो रही थी। अचानक घर का दरवाजा खुलता है। रोशनी का एक टुकड़ा गली तक फैल जाता है। उसी के साथ देशमुख का स्वर - ''कौन रो रहा है ?'' सहमी हुई लड़की दायरे में आ जाती है। रामचन्द्र देशमुख सीढ़ियाँ उतर कर उसके पास जाते हैं। पूछते हैं - कौन अस ते हां ? जवाब मिलता है - ''चांद बी'' ''इहां काबर खेड़े हस'' पूछने पर जवाब में करूणा की साकार मूर्ति वह लड़की अपने हाथ में जीर्ण कटोरे को बढ़ा देती है। उसके मुँह से शब्द निकलते हैं - ''भाजी मांगे बर'' फिर वह अचानक फफक पड़ती है।

भाजी मांग रही थी वह लड़की - किससे ? शायद किसी से नहीं या शायद सबसे, उम्मीद के नाम पर उसका रोना था - शायद कोई सुन ले। श्रावणी रात के उस शब्दहीन रुदन में रामचन्द्र देशमुख की चेतना को आहत कर दिया। भीतर तक झकझोर दिया। बीस साल पहले लगा हुआ घाव फिर रिसने लगा। पहले लोकसंस्कृति और अब लोकजीवन, छत्तीसगढ़ भी तो ''चांद बी'' की तरह गूंगा है - बोल नहीं सकता, मांग नहीं सकता। सिर्फ रोता है नि:शब्द कौन समझेगा - इन आसुओं की भाषा ? चांद बी की इस घटना के बाद रामचन्द्र देशमुख के दिमाग में समूचे छत्तीसगढ़ की तस्वीर चलचित्र की भाँति घूमने लगी।

''छत्तीसगढ़ ! चिरअभाव छत्तीसगढ़ !'' दुख दैन्य से पीड़ित छत्तीसगढ़ संकीर्ण संस्कारों के भीतर छटपटाता छत्तीसगढ़। निरन्तर अपमान और उपेक्षा में अपने स्वाभिमान को तलाशता छत्तीसगढ़। इस छत्तीसगढ़ से सहानुभूति तो बहुतों ने दिखाई है - अब भी दिखाते हैं, परन्तु इस अंचल के दुख को पीकर अपने में समोने की आकुल चेष्टा, समोकर उसे पूरी मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त करने की सफल चेष्टा केवल रामचन्द्र देशमुख ने की थी। ''चंदैनी गोंदा'' इसी ऐतिहासिक और कालजयी अभिव्यक्ति का नाम था.......।

अंचल के लोक-मंचीय-कला इतिहास में ''चंदैनी गौंदा'' से बड़ी क्रान्ति न कभी हुई थी न संभवत: होगी। इस मंच के माध्यम से छत्तीसगढ़ की लोककला और लोक संस्कृति का जो भव्य रूप सामने आया उससे लाखों दर्शकों की आंखे चौंधिया गईं।

''चंदैनी गोंदा'' के बाद की भव्य प्रस्तुति थी ''देवार डेरा'' जो इस अंचल की सर्वाधिक उपेक्षित देवार जाति को समर्पित थी। देवार, रोटी के कुछ टुकड़ों के लिये गाँवों और शहरों में घूमते रहना ही जिनका जीवन है। अभागे इतने कि छ: सात फुट लम्बी जगह जो हर आदमी को मरने के बाद दफ के लिये मिल जाती है इन्हें जीते जी नसीब नहीं। इनका छोटा सा डेरा भी दूसरों की जमीन पर बनता है। डेरा जिसमें इनका बचपन कुलबुलाता है, यौवन सिसकता है और बुढ़ापा हताशा अंतिम सांसे गिनता है। डेरा, जिसके साथ आदमी नहीं जानवर होते हैं। जीने की नियति में धकेल दिये जाते हैं ये अभागे।

''चंदैनी गोंदा'' के निर्माण के दौरान ही रामचन्द्र देशमुख ने इस कला वैभव को परख लिया था। अब शुरू हुई इनके दुखों को शब्द देने की प्रक्रिया ''देवार डेरा'' के माध्यम से। देवार डेरा, जो वस्तुत: धमकते हुए घुंघरूओं के बीच ढरकते आँसुओं का इतिहास था। ''देहाती कला विकास मंडल'' और ''चंदैनी गोंदा'' के बाद लोकमंच की परिष्कार यात्रा का तीसरा पड़ाव था - ''देवार डेरा''।

और फिर उदित हुई-लोक सांस्कृतिक गगन में छत्तीसगढ़ की वही चिरव्यथित मा ''कारी'' के रूप में - अपनी ममतामयी ज्योत्स्ना लेकर। नारी की बाह्य आकृति ही

उसका अंतिम परिचय नहीं है, ईमानदारी, स्वामिभक्ति सरलता, ममता जैसे हीरे-मोती भी उसके अंत:करण में जगमगाते हैं। ''कारी'' इन्हीं जगमगाते मूल्यों की प्रभापुंज थी। तीन चार वर्षों के भीतर ही अपने चालीस प्रदर्शनों से ''कारी'' ने अपनी ममता की फुहार से समूचे अंचल को भिगो दिया। ''कारी'' चंदैनी गोंदा के बाद अंचल की अद्वितीय लोकमंचीय प्रस्तुति थी, जिसका निर्देशन भार रामचन्द्र देशमुख की अनुभवी आंखों ने अंचल के ऊर्जावान निर्देशक राम हृदय तिवारी को सौंपा था। ''कारी'' जिन्होंने एक बार देखा बार-बार देखने को विवश थे। प्रेम साईमन ने ''कारी'' स्क्रिप्ट लिखने का सौभाग्य प्राप्त किया था।

आज रामचन्द्र देशमुख हमारे बीच नहीं हैं। आजीवन मौसम के बदलते तेवर के साथ जिस तरह रामचन्द्र देशमुख ने संघर्ष किया था, आज अंदाजा लगाना मुश्किल है। उनके पास बैठने और बात करने का अलग आनंद था। किनते अनुभव, कितने संस्मरण, कितनी यादें। सुखद यादें, कचोटने वाली यादें, गुदगुदाने वाली यादें, यादें जो धूल में मिल चुकी है, यादें जो इतिहास बन चुकी हैं, यादों का बहुत बड़ा जखीरा था इस आदमी के पास।

रामचन्द्र देशमुख ने डेढ़ हजार पुस्तकों का ग्रंथालय बनाया था। वे साहित्य के अध्येता थे। अद्भुत अध्ययन क्षमता थी उनमें। उनके देहावसान के बाद उनके समूचे ग्रंथालय को उनके प्रिय प्रशंसक ने खरीदा। कला मंच के पारखी, मर्मज्ञ, अध्ययनशील रामचन्द्र देशमुख लोकनाट्य मंच के सेतुबंध थे, जिन्होंने छत्तीसगढ़ के गांवों में जागरण की लहर दौड़ाई।

प्रश्नावली

(1) लघु उत्तरीय प्रश्न : टिप्पणी लिखिये।
- (1) रामचन्द्र देखमुख का व्यक्तित्व
- (2) ''चंदैनी गोंदा'' का उद्देश्य
- (3) ''देवार डेरा'' लोकमंच का समाजिक पहलू

(2) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न :-
- (1) रामचन्द्र देशमुख का जन्म किस ग्राम में हुआ था? पिनकापार
- (2) उस बालिका का नाम बताईये, जो ''चंदैनी गोंदा'' के सृजन का कारण बनीं। चोरा बाई
- (3) कारी का कथानक नारी प्रधान है या पुरुष प्रधान?
- (4) रामचन्द्र देशमुख के पिता का नाम बताइये।
- (5) ''कारी'' का ''स्क्रिप्ट'' किसने लिखा? प्रेम साईमन

(3) कपिलनाथ कश्यप

कपिलनाथ कश्यप का जन्म 6 मार्च 1906 को बिलासपुर जिले के पौना ग्राम में हुआ था। जब वे नवमीं कक्षा में अध्ययनरत थे तब पूरे देश में असहयोग आन्दोलन का शोर था। कश्यपजी भी बीच में ही पढ़ाई छोड़कर असहयोग आन्दोलन का शोर था। कश्यपजी भी बीच में ही पढ़ाई छोड़कर असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े और जेल की यात्रा भी किये। वे संघर्षशील व्यक्ति थे। सन् 1931 में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी की। आगे म.प्र. के राजस्व विभाग में विभिन्न पदों पर आसीन रहकर 1961 में दुर्ग जिले से सेवानिवृत्त हुए।

अपने सम्पूर्ण संसार में कपिलनाथ कश्यप एक ऐसे सर्जक के रूप में दिखाई देते हैं, जिसकी मुख्य चिन्ता छत्तीसगढ़ी भाषा और समाज को बेहतर बनाने की है। वे इतिहास की तह में जाकर मनुष्य की अपार सृजनशीलता को रेखांकित करते हैं। वे मनुष्य को अपनी सृजन का केन्द्र मानते हैं। श्री रामकथा, श्री कृष्णकथा और श्री महाभारत कथा जैसे उनके प्रबंध काव्यों के अध्ययन से पता चलता है कि उनकी समझ में जहाँ एक तरफ भौतिक शक्तियाँ मनुष्य को जिस गति से बदल रही है, वहीं आज का मनुष्य भी ऐतिहासिक और पौराणिक पात्र चरित्रों को आत्मसात करके भौतिक चरित्रों को बदल सकता है और ऐसा करके वह स्वयं कभी भी अपना स्वरूप और जीवन को मानवीय बना सकता है।

कपिलनाथ कश्यप एक साथ कवि, महाकवि, अनुवादक, आत्मकथा लेखक, कहानीकार, तथा एकांकीकार, सभी रूपों में हमारे सामने आते हैं। कश्यपजी छत्तीसगढ़ी के आठों विधा को अपनी कलम से अभिसिंचित करने वाले अप्रतिम साहित्यकार हैं। कश्यपजी की रचना-सूची काफी बड़ी है। आगे तीन बड़े महाकाव्यों के अतिरिक्त उन्होंने 'हीराकुमार' नामक खण्डकाव्य भी लिखा। उन्होंने व्यास रचित गीता का छत्तीसगढ़ी में अनुवाद भी किया। 'अंधियारी रात' (एकांकी) 'नवाबिहान' (एकांकी संग्रह) पूजा के फूल (एकांकी संग्रह) गुंरावट बिहा (एकांकी संग्रह), डहर के फूल (कहानी संग्रह) और निबंध निसैनी निबंधसंग्रह प्रमुख हैं। उनके श्री रामकथा का प्रकशन छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सौजन्य से हुआ। इसी पुस्तक पर उन्हें म.प्र. साहित्य परिषद द्वारा 'ईसुरी' पुरस्कार से सम्मानित भी किया चुका है।

उनके दूसरे प्रबंध काव्य श्री कृष्णकथा को देखकर मुकुटधर पाण्डे ने कहा था कि - छत्तीसगढ़ी में यद्यपि कृष्ण चरित के एकाध अंश दानलीला आदि के रूप में लभ्य थे। तथापि सम्पूर्ण कृष्ण चरित्र के रूप में लभ्य नहीं था। इस अभाव की पूर्ति इस ग्रंथ के द्वारा होती है।

कपिलनाथ कश्यप ने तीन महाकाव्य लिखे हैं - श्रीरामकथा, श्रीकृष्णकथा और

महाभारत कथा। इनमें पाठकों ने सर्वाधिक पसंद की - "श्रीरामकथा" को। इसकी कथा ऐतिहासिक है किन्तु सन्देश मौजूदा पृष्ठ भूमि पर आधृत है। यह रचना ईसुरी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। यह रामचरित मानस का रूपान्तरण नहीं है इसे हम बरात परघौनी, बरतिया जेठ जैसे प्रसंगों को पाकर रामकथा का आंचलिक संस्करण कह सकते हैं। कहा जाना चाहिए कि इस रचना में एक भी संवाद और प्रसंग पारजैविक नहीं है उनका दूसरा महाकव्य "कृष्णकथा" कृष्ण की बाललीलाओं पर आधृत है। इस महाकाव्य के कथ्य पक्ष का आधार सुखसागर एवं विश्राम सागर है। मुकुटधर पाण्डे के अनुसार - "छत्तीसगढ़ी में यद्यपि कृष्ण चरित्र के एक आध अंश "दानलीला" आदि के रूप में लभ्य थे तथापि सम्पूर्ण कृष्ण चरित्र ग्रंथ के रूप में लभ्य नहीं था। इस अभाव की पूर्ति इस ग्रंथ के द्वारा होती है।"

इसमें कपिलनाथ कश्यप ने परम्परा से हटकर अनेक नये प्रयोग किये हैं जैसे - कृष्ण और अन्य ग्वाल किस दूध दही का उपयोग नहीं कर पाते वह गोपियों द्वारा कंचन नगरी मथुरा में बेचा जाता है। इस भेदभाव को दूर कराने के लिए कृष्ण दूध दही चुराते हैं, मटके फोड़ते हैं।

मथुरा नगरी जान न देवन, अब गोकुल के दूध दही
बिन पेट भर खाये तुमन, जान न पावा बात सही।
अब ले बेचा मथुरा जाके, चोरी-चोरी दूध दही
भर-भरके जो गाय चरावय, पांवय पीये छाछ मही॥

कपिलनाथ कश्यप एक साथ कवि, महाकवि, अनुवादक, आत्मकथा लेखक, कहानीकार तथा एकांकीकार सभी रूपोंमें हमारे सामने आते हैं। कश्यपजी छत्तीसगढी के आठों विधा को अपनी कलम से अभिसिंचित करने वाले अप्रतिम साहित्यकार हैं।

छत्तीसगढ़ी भाषा पर कपिलनाथ कश्यप की अच्छी पकड़ है। मुकुटधर पाण्डे का मत है - भाषा इसकी मंजी हुई मुहावरेदार और प्रवाहयुक्त है। छंद विविध प्रकार के प्रयुक्त हुए हैं। त्रिभंगी छंद का छत्तीसगढ़ी में प्रयोग प्रथम बार देखने में आया। बड़ा अच्छा लगा।

"श्रीरामकथा" के अंश

मंगलाचरण -

तभ्भो ले बिसवास राख के आपन मन मा।
रंच न राखें कुछुच लुका के चौथे पन मा॥
एक्को झन तो राम कथा ला पढ़ अपनाहीं।

मोर लिखे के भूती सब मोला मिल जाही॥

रामचन्द्रजी के बचपन के वर्णन में कवि भाव-विभोर हो उठे हैं -

लाम डिठौना करिया काजर आँज लगावैं।
देख-देख महतारी मन अब्बड़ सुख पावँय॥
आ रे कउँवा बाबू मन ला खेल खेलावे॥
मोहन भोग, मीठ रोटी, खाये बर पावे॥
दाईमन अइसन कह-कह उनला दुलरावँय।
रोटी-पीठा ठग-ठ मोहन भोग खवावँय॥
पिंवरा झंगला रूनझुन बाजै पाँव पँजनिया।
महतारी मन रोज सवारैं साँझ-बिहनया॥

"मेघनाद-लक्ष्मण युद्ध" में कवि ने लक्ष्मण को युद्धवीर के रुप में चित्रित किया है-

जुद्ध भूमि मा चिखला मातिस, लहू बोहाके निकलिस धार।
मूड़ कटाके भुइयाँ मा गिर, पारँय मारा-धरा गोहार।
चूम धनुस लछिमन रिस करके मारिस, बान कान ले तान।
छाती लागत मेघनाद गिर, छाड़िस निसाचर प्रान॥
इन्द्रजीत के मूड़ कटाये, गिरिस राम के आगू जाके।
भुजा बीर के गिरिस महल मा, सुलोचना के आगू आके॥

वीभत्स रस का उदाहरण "रावण-वध" के अन्तर्गत देखा जा सकता है -

निकल-निकल के लहू-धार बोहिस नखा अस।
पूरा आगे वोमा झट सावन-महिना कस॥
लहू-धार मा भुजा-मूड़-धड़-धनुस-बोहावय।
लागय मछरी-मंगर-साँप बोहाके जावँय॥
कउँवा-विधवा-बाज बइठके।
खावयँ चीथ-चीथ माँस।
धरँय चोंच सुतरी जस पोटा।
लड़-लड़ उड़त चढ़ँय अकास॥

प्रकृति का चित्रात्मक एवं ध्वन्यात्मकता वर्णन -

लता पेड़ मा लपट हवा पाके लहरावै॥
झूम-झूम के जथा लाज मा सीस नवावै॥

कहूँ फूल के गुच्छा ओरमें रंग-बिरंगा ॥
जहाँ बैठ के गुन-गुन-गुन-गुन करै पतिंगा ॥
बघवा गरजै कहूँ डरावन बन के भीतर।
लकठा आके किड़िक-किड़िक कह नाचे तीतर ॥
कहूँ रूख मा घुघुवा घू-घू कर नरियावैं।
छोटे-छोटे चिरई-चिरगुन ला डरवावैं।
कहूँ चिरैया उड़-उड़ बइठैं, गा-गा गीद अनेक प्रकार।
फुदक-फुदक रूखुवा के उप्पर,
कलरव कर-कर करैं बिहार ॥

महादेच के बारात की तैयारी हो रही है। इस प्रसंग में शिवजी के विकराल व भयानक रूप का वर्णन द्रष्टव्य है -

फुफुकारत अहिराज साँप के पामा बाँधिन।
कनिहा मा करधनी मोटहा अजगर राखिन ॥
करिया-करिया बीछी के कुँडल ओरमाइन।
गउँवा डोमी के माला गर मा पहिराइन ॥
भुखा घोड़ा करायट के दउ हाथ मा कंगना।
नाग-साँप के दुधिया जटा जूट मा बंधना ॥

राम-लक्ष्मण की देह में रक्त के पड़े छींटे इस प्रकार शोभा दे रहे हैं, मानों नीले-पीले कमल-पुष्प पर लाल रंग सज्जित हो। कवि की कल्पना उपमा अलंकार को सहज जन्म देती है -

छिटिया-बुँदिया लहू देह मा, राम-लखन के लगे रहै।
नीला-पीला कमल-फूल मा, लाल रंग जस फभे रहै ॥

लंका में अवस्थित वियोगिनी सीता राम के बिना जल बिन मछली की तरह तड़पती है। उसे तन की सुध नहीं है। कुँतल अस्त-व्यस्त हैं। राम की स्मृति में कंठहार खींच-खींचकर विकृत कर दिया गया है। तीज के अवसर पर आस्वाद्य लिया जाने वाला छत्तीसगढ़ी व्यंजन विशेष ठेठरी सदृश उसकी काया है जिस पर फटा-चिथड़ा वस्त्र आच्छादित है -

चुंदी रहय निच्चट छरियाये, माला-गजरा सब मुरकेटे।
ठेठरी अस सब देंह सुखाये, चिथरा लुगरा रहे लपेटे ॥

प्रश्नावली

(1) टिप्पणी लिखिये।
- (1) कपिलनाथ कश्यप का साहित्यिक परिचय।
- (2) कपिलनाथ कश्यप की 'श्रीराम कथा'
- (3) कपिलनाथ कश्यप का रचना संसार

(2) अति लघुउत्तरीय प्रश्न।
- (1) कपिलनाथ कश्यप की जन्म तिथि बताईये।
- (2) किस पुस्तक पर कपिलनाथ कश्यप को मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् द्वारा 'ईसुरी सम्मान' प्राप्त हुआ ?
- (3) 'डहर के फूल' निबंध संग्रह है अथवा कहानी संग्रह ? स्पष्ट कीजिये।
- (4) 'गोहार' किस विधा की रचना है ?
- (5) 'कनिहा' शब्द का हिन्दी रूप लिखिए ?

संदर्भ ग्रंथ

1. धर्मदास की शब्दावली-कबीर धर्मदास धर्मसभा प्रकाशन दामाखेड़ा
2. सोनपान - लखनलाल गुप्त
3. गोठ - डॉ. सत्यभामा आड़िल
4. अकादसी अउ अनचिन्हार - डॉ. विनय पाठक
5. छत्तीसगढी गज़ल - मुकुन्द कौशल
6. श्री रामकथा - कपिलनाथ कश्यप
7. छत्तीसगढ़ी दानलीला - पं. सुंदरलाल शर्मा
8. छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य का अनुशीलन (पी-एच.डी. शोध प्रबंध) -डॉ. जनकबाला शर्मा
9. उत्तर भारतेन्दुकाल के परिप्रेक्ष्य में पं. सुंदरलाल शर्मा की संपूर्ण रचना धर्मिता का अनुशीलन (पी-एच.डी. शोध प्रबंध) - डॉ. सविता मिश्र
10. लोकमंच के पुरोधा -संतराम देशमुख
11. चंदैनी गोंदा -स्मारिका
12. छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य- डॉ. सत्यभामा आड़िल
13. छत्तीसगढ़ी साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन-डॉ. नंदकिशोर तिवारी
14. छत्तीसगढ़ी का उद्विकास-डॉ. नरेन्द्रदेव वर्मा
15. कपिलनाथ कश्यप : व्यक्तित्व और कृतित्व-डॉ. विनय पाठक
16. संत धर्मदास -डॉ. सत्यभामा आड़िल